RAJBIL26868/2016/1284525
अक्टूबर, 2025
6 वर्ष 12 अंक

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

लोकप्रिय मासिक पत्रिका

पेज संख्या : 28
प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

तमसो मा ज्योतिर्गमय

• श्रीनाथ ट्रेडिंग कम्पनी • श्रीनाथ इलेक्ट्रोप्लाजा
श्रीनाथ इलेक्ट्रोविजन
(किचन, होम एवं इलेक्ट्रोनिक्स एप्लाईजेस) होलसेल व रिटेल विक्रेता
कन्हैयालाल पगारिया
भारी छूट
UP TO
70%
DISCOUNT
सतीश पगारिया
एक्सचेंज सुविधा
एक ही छत के नीचे घरेलू सामान की विशाल रेंज
पंखा - छत पंखा, टेबल पंखा, वॉलफेन, पेडस्टल फेन
इनडेक्शन चुल्हा - (इलेक्ट्रीक गैस चुल्हा)
रु.श्व.ष्ठ. 3ष्ठ, अ.ङ्क. टी.वी.
फ्रीज, डी फ्रीज, वाटर कुलर
वॉशिंग मशीनें
सिलाई मशीन - पेरदान
अटेचियां - बिफ्रकेस
ट्रोली बैग
स्कूल, कॉलेज, ऑफिस बैग
गैस चुल्हा
रूम कुलर
प्रेस
मिक्सर
जुसर
जुसर, मिक्सर ग्राईन्डर
हैंड मिक्सर
हैयर ड्रायर
वाटर प्यु रिफायर आर.अ
म्युजिक सिस्टम
हैडफोन - ईयर फोन
किचन चिमनी
कोफी मेकर
होमथियेटर
इलेक्ट्रीक केटल
ईमरजेंसी लाईट
माइक्रोवेब
चोपर
बर्तन सेट
रोटी/खांखरा मेकर
सेन्डवीज टोस्टर
हैण्ड मिक्सर
राईस कुकर
वाटर बोतल
एयरकंडिशनर (ए.सी.)
वॉशिंग मशीन
फुड प्रोसेसर
पापअप टोसटर
बीटर
मोप मशीन
प्रेशर जुसर
हैयर स्टेनर
द्वारकेश चौराहा, स्टेशन रोड, द्वारकेश वाटीका के सामने, पंजाब नेशनल से आगे कांकरोली
संपर्क 9414874111, 9468578444, 7014606851

जयवर्द्धन

www.jaivardhannews.com

RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 6, अंक 11 | अगस्त, 2025

(प्रत्येक माह 15 तारीख तक प्रकाशित)

सम्पादक एवं प्रकाश

ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक

लक्ष्मणसिंह राठौड़

सहयोगी

परमेश्वरसिंह चुंडावत, भावना शर्मा

सुधीर दवे, अनिल सिंह चौहान,

कार्यालय पता

C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद

मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशंचद आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद व आभारी है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

सम्पादकीय

दीपोत्सव की सार्थकता

दीपोत्सव केवल रोशनी और उत्सव का पर्व नहीं, बल्कि यह हमारे सांस्कृतिक मूल्यों, एकता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। अंधकार पर प्रकाश की विजय का यह पर्व हमें यह सिखाता है कि जीवन में चाहे कितनी भी चुनौतियां क्यों न हों, आशा की एक छोटी सी किरण भी अंधकार को मिटा सकती है। घर-आंगन में जलते दीये न केवल सौंदर्य बढ़ाते हैं, बल्कि समाज में प्रकाश, ज्ञान और सद्भावना फैलाने का संदेश भी देते हैं।

दीपावली का त्योहार हर वर्ग के लोगों को जोड़ता है— चाहे वह अमीर हो या गरीब, ग्रामीण हो या शहरी। इस दिन लोग न केवल अपने घरों को रोशन करते हैं, बल्कि मन में भी सकारात्मकता और नई शुरुआत की भावना जगाते हैं। यही कारण है कि दीपोत्सव केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बन गया है।

आज के बदलते दौर में दीपोत्सव हमें यह याद दिलाता है कि सच्चा प्रकाश केवल दीपक में नहीं, बल्कि हमारे कर्म, विचार और आचरण में छिपा है। यदि हम सब अपने जीवन में सत्य, प्रेम और करुणा का दीप जलाएं, तो समाज सच में रोशन हो उठेगा। यही दीपोत्सव की वास्तविक सार्थकता है।

ललिता राठौड़, सम्पादक

कवर स्टोरी

खतरा कहीं भी, कभी भी इन नंबरों से मिलेगी तुरंत राहत!

आज के दौर में जहां जीवन की गति तेज है, वहीं अप्रत्याशित संकट भी कभी भी दस्तक दे सकता है। ऐसी स्थिति में, अगर आपके पास सही जानकारी हो, तो आप न केवल अपनी बल्कि दूसरों की जान भी बचा सकते हैं। सरकार की ओर से आमजन की सुरक्षा और सुविधा के लिए कई जारी किए गए हैं। यह लेख उन महत्वपूर्ण आपातकालीन और हेल्पलाइन नंबर से परिचित कराएगा, जो वृद्धों, बच्चों और महिलाओं सहित हर नागरिक के लिए जीवन रक्षक साबित हो सकते हैं। इन नंबरों को अपने मोबाइल में सेव करें और आपात स्थिति में आत्मविश्वास के साथ उनका उपयोग करें।

राष्ट्रीय इमरजेंसी नंबर – 112

यह ऑल इन वन नंबर है। किसी भी प्रकार की आपात स्थिति में पुलिस, फायर ब्रिगेड या एम्बुलेंस के लिए 112 डायल कर सकते हैं। कॉल करने के बाद नजदीकी सहायता केंद्र से तुरंत मदद पहुंचती है। खास बात यह है कि यह नंबर पूरे देश में एक समान है।

पुलिस सहायता – 100

सड़क हादसा, कोई अपराध, छेड़छाड़, चोरी या किसी आपराधिक स्थिति में फंसे हैं, तो तुरंत 100 नंबर डायल करें। पुलिस की तरफ से सहायता मिलेगी। यह सेवा 24 घंटे के लिए एक्टिव है।

बिजली इमरजेंसी – 1912

अगर आपके क्षेत्र में बिजली गुल है, कोई खुले तार लटक रहे हैं या बिजली से जुड़ा कोई बड़ा खतरा है, तो 1912 पर कॉल करें। बिजली विभाग द्वारा जल्द सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी। अजमेर विद्युत वितरण निगम के **टोल फ्री नंबर 1800-180-6565** पर भी संपर्क किया जा सकता है।

राज्य हेल्पलाइन – 181

राजस्थान में आमजन की समस्या या शिकायत निवारण के लिए केन्द्रीकृत नंबर 181 जारी किए गए हैं। यहां बोलकर भी किसी भी विभाग की शिकायत दर्ज करवाई जा सकती है। शिकायत नंबर मिलते हैं और अपडेट भी ले सकते हैं।

एम्बुलेंस सेवा – 108

स्वास्थ्य संबंधी आपात स्थिति, दुर्घटना या अचानक बीमार पड़ने पर 108 पर कॉल कर सकते हैं। यह सरकारी एम्बुलेंस सेवा है जो हर नागरिक को मुफ्त और तुरंत चिकित्सा सहायता प्रदान करती है।

बाल हेल्पलाइन – 1098

बच्चों की सुरक्षा के लिए सरकार ने 1098 नंबर जारी किया है। किसी भी बच्चे को अगर उत्पीड़न, हिंसा या किसी संकट का सामना करना पड़े तो इस नंबर पर कॉल करके तत्काल सहायता मिलती है।

पानी की समस्या – 1916

कई बार अचानक पानी की सप्लाई बंद हो जाती है या पाइप लाइन फटने जैसी समस्या आती है। ऐसी स्थिति में आप 1916 पर कॉल कर सकते हैं। नगर निगम या जल विभाग द्वारा तुरंत सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी।

फायर ब्रिगेड – 101

अगर कहीं आग लग गई है, चाहे वो घर में हो, दुकान में हो या किसी सार्वजनिक स्थान पर तो तुरंत 101 डायल करें। दमकल तुरंत मौके पर पहुंचेगी।

वरिष्ठ नागरिक हेल्प – 14567

वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा और स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए सरकार ने 14567 नंबर शुरू किया। कोई बुजुर्ग अकेले हैं व कोई परेशानी है, तो मदद ले सकते हैं।

मेडिकल इमरजेंसी – 104

अगर किसी व्यक्ति को बुखार, सांस लेने में तकलीफ, हार्ट अटैक या अन्य स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो तो 104 पर कॉल करके डॉक्टरी सलाह और मदद ली जा सकती है।

राजसमंद हेल्पलाइन

राजसमंद पुलिस कंट्रोल रूम	:	100, 02952-220712
पुलिस वाट्सएप	:	87648-54100
साइबर ठगी	:	1930
मादक पदार्थ निषेध आ सूचना केंद्र के नंबर	:	1933
नशामुक्त भारत अभियान हेल्पलाइन	:	1446
महिला सहायता नंबर	:	1090

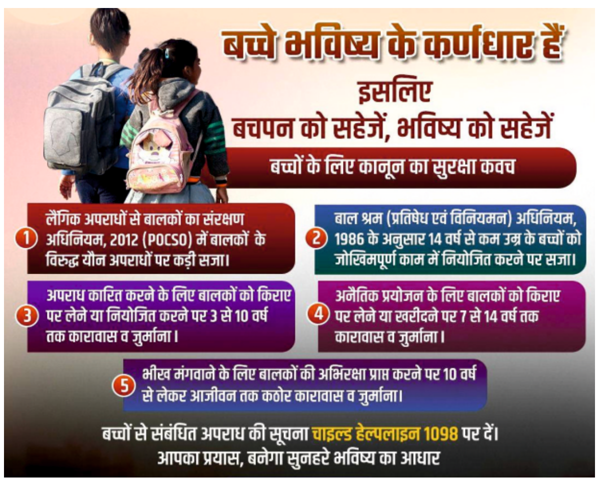

राजस्थान लोक परिवहन सेवा

ॐ माँ धनोप ट्रावेल्स

रेलमगरा, जिला- राजसमंद

नियमित बस सर्विस एवं पार्सल सुविधा उपलब्ध

मुकेश टांक : 9414928111, 9509450476 शुभ दीपावली निलेश टांक : 8946955585,7210080910

कांकरोली से चितौड़गढ

कांकरोली	रेलमगरा	कपासन	चितौड़गढ़
5:25 प्रातः	6:25 प्रातः	7:25 प्रातः	8:15 प्रातः
7:30 प्रातः	8:25 प्रातः	9:25 प्रातः	10:30 प्रातः
8:55 प्रातः	10:10 प्रातः	11:15 प्रातः	12:15 दोपहर
10:25 प्रातः	11:25 प्रातः	12:20 दोपहर	1:15 दोपहर
1:00 दोपहर	1:50 दोपहर	3:00 सायं	4:00 सायं
2:30 दोपहर	3:30 सायं	4:25 सायं	5:25 सायं
5:20 सायं	6:15 सायं	7:15 सायं	8:15 रात्रि

चितौड़गढ से कांकरोली

चित्तौडगढ़	कपासन	रेलमगरा	कांकरोली
5:25 प्रातः	6:20 प्रातः	7:30 प्रातः	8:25 प्रातः
7:00 प्रातः	8:10 प्रातः	9:15 प्रातः	10:00 प्रातः
8:50 प्रातः	10:10 प्रातः	11:25 प्रातः	12:20 दोपहर
11:10 प्रातः	12:20 दोपहर	1:25 दोपहर	2:20 दोपहर
1:00 दोपहर	2:10 दोपहर	3:25 सायं	4:25 सायं
2:50 दोपहर	4:10 सायं	5:20 सायं	6:15 सायं
4:50 सायं	6:00 सायं	7:05 रात्रि	8:00 रात्रि

नाथद्वारा से चित्तौड़गढ़ बस
वाया मावली, फतहनगर, कपासन
सुबह 8.25 बजे रवाना-
सुबह 11.30 बजे रवाना

नाथद्वारा से चित्तौड़गढ़ बस
वाया मावली, फतहनगर, कपासन
सुबह 7.30 बजे से रवाना
दोपहर 12.35 बजे रवाना

शादी पार्टी के लिए संपर्क करे।

कांकरोली से सांवरियाजी/आवरी माताजी

कांकरोली	रेलमगरा	कपासन	सांवरियाजी	आवरी माताजी
6:05 प्रातः	7:00 प्रातः	8:05 प्रातः	8:50 प्रातः	9:05 प्रातः
9:40 प्रातः	10:40 प्रातः	11:40 प्रातः	12:35 दोपहर	12:50 दोपहर
1:15 दोपहर	02:05 दोपहर	3:05 दोपहर	4:00 दोपहर	4:15 दोपहर
4:45 सायं	5:35 सायं	6:40 सायं	7:40 सायं	8:00 रात्रि

आवरी माताजी/सांवरिया से कांकरोली

आवरी माताजी	सांवरियाजी	कपासन	रेलमगरा	कांकरोली
5:30 प्रातः	6:00 प्रातः	7:05 प्रातः	8:15 प्रातः	9:10 प्रातः
9:15 प्रातः	9:40 प्रातः	11:00 प्रातः	12:00 दोपहर	12:50 दोपहर
1:00 दोपहर	1:30 दोपहर	2:25 दोपहर	3:40 दोपहर	4:30 सायं
4:40 सायं	5:00 सायं	6:25 सायं	7:30 सायं	8:30 रात्रि

कवर स्टोरी

बिजली दरें घटी, पर बढ़ेगा बिल

राजस्थान में अब बिजली के बिल आने वाले महीनों में महंगे हो सकते हैं। जयपुर, अजमेर और जोधपुर डिस्कॉम की टैरिफ याचिका को राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग से मंजूरी मिल गई है। दिलचस्प बात यह है कि इस बार जहां बिजली दरों में कुछ श्रेणियों में कमी की है, वहीं नए चार्ज और बढ़े हुए स्थायी शुल्क की वजह से उपभोक्ताओं को जेब से ज्यादा पैसा देने पड़ेंगे। रेगुलेटरी सरचार्ज पहली बार लागू किया है। यह प्रति यूनिट 1 रुपए तय किया है। यानी अब उपभोक्ता को बिजली की वास्तविक दर के ऊपर 1 प्रति यूनिट अतिरिक्त देना होगा। भले ही टैरिफ दर में कुछ कटौती की है, लेकिन इस नए सरचार्ज के चलते बिल में बढ़ोतरी तय है। विनियामक अधिभार में फ्यूल सरचार्ज समायोजित होगा। हालांकि, फ्यूल सरचार्ज हर माह करीब 50 पैसे रहता है, लेकिन विनियामक अधिभार दोगुना लगेगा।

अक्टूबर का बिल नई रेट के हिसाब से आएगा

घरेलू श्रेणी उपभोग यूनिट	पुरानी रेट रू.प्रति यू.	स्थायी शुल्क रू. प्रति माह	नई रेट रू. प्रति यू.	नया शुल्क रू. प्रति माह
50 यूनिट तक	4.75	150	4.75	150
50 से 150	6.50	300	6.00	300
150 से 300	7.35	400	6.00	500
300 से 500	7.65	400	7.00	500
500 से ज्यादा	7.95	4.50	7.50	800
अघरेलू श्रेणी	**पुरानी रेट**	**स्थायी शुल्क**	**नई रेट**	**नया शुल्क**
100 यूनिट	7.55	330	7.00	350
100 से 200	8.50	420	8.50	450
200 से 500	8.85	500	8.50	700
500 से ज्यादा	8.95	500	8.50	700
छोटे उद्योग	**पुरानी रेट**	**स्थायी शुल्क**	**नई रेट**	**नया शुल्क**
500 यूनिट	6.00	90	6.00	90
500 से ज्यादा	6.45	120	6.00	150

100 यूनिट से कम उपभोग वालों से 70 पैसे यूनिट तक रेगुलेटरी सरचार्ज लगेगा। 300 यूनिट तक उपभोग वाले घरेलू उपभोक्ताओं पर रेगुलेटरी सरचार्ज का असर नहीं पड़ेगा, सरकार वहन करेगी।

300 से 500 यूनिट तक के स्लैब में जहां प्रति यूनिट रेट 65 पैसे कम की है, वहीं स्थाई शुल्क 500 रुपए कर दिया है, जो पहले 400 रु. ही था। ऐसे ही 500 यूनिट से ज्यादा बिजली खर्च करने वाले उपभोक्ताओं की बिजली दरें जहां 45 पैसे प्रति यूनिट कम की हैं। वहीं, स्थाई शुल्क 450 रु. से बढ़ाकर 800 रुपए कर दिया है। इसी तरह से अघरेलू उपभोक्ताओं का भी 200 रुपए तक स्थाई शुल्क बढ़ाया गया है। छोटे उद्योगों पर स्थायी शुल्क 30 रुपए प्रति एचपी तक बढ़ा है। डिस्कॉम ने 10 किलोवॉट से ज्यादा लोड वाले उपभोक्ता को शाम 6 से रात 10 बजे तक बिजली उपभोग पर 10 प्रतिशत अधिभार लगाना प्रस्तावित है। गौरतलब है कि डिस्कॉम्स ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 2 अप्रैल 2025 को आयोग में ये टैरिफ याचिकाएं पेश की थीं, जिन्हें अब मंजूरी दे दी गई है। इस तरह बिजली कंपनियों का दोहरा बर्ताव सामने आया है, जिसे आमजन को समझने की जरूरत है।

300 यूनिट तक सरचार्ज भार नहीं

डिस्कॉम प्रबंधन ने दावा किया है कि 25 साल में पहली बार डिस्कॉम ने लगभग सभी श्रेणियों में विद्युत शुल्क कम करने का प्रस्ताव दिया। सिर्फ एक श्रेणी (0 से 50 यूनिट तक प्रति माह विद्युत उपभोग करने वाले घरेलू उपभोक्ताओं) के लिए विद्युत शुल्क 4 रुपए 75 पैसे प्रति यूनिट यथावत रखा गया है। अधिकांश श्रेणियों में बिजली की दरें कम की गई है। राजस्थान में अन्य राज्यों की तुलना में बिजली सस्ती है।

बड़े उद्योगों पर टैरिफ का भार

डिस्कॉम की याचिका पर सुनवाई करते हुए आयोग ने पहली बार पावर प्लांट पर पैरलल ऑपरेशन चार्ज लगाया है। वहीं, बड़े उद्योगों को दी जाने वाली एक रुपए प्रति यूनिट की रिबेट भी खत्म कर दी है। इसके अलावा विद्युत विनियामक आयोग ने नए उद्योग को दी जाने वाली टैरिफ छूट भी कम कर दी है।

अब सुबह-शाम बिजली और महंगी

10 किलोवॉट से ज्यादा लोड वाले उपभोक्ताओं पर टाइम ऑफ डे टैरिफ लगाया जाएगा। सुबह 6 से 8 बजे तक बिजली उपभोग पर 5% और शाम 6 से रात 10 बजे तक बिजली उपभोग पर 10% ज्यादा शुल्क देना होगा। हालांकि, दोपहर 12 से शाम 4 बजे तक खर्च की गई बिजली पर 10% की छूट भी मिलेगी। इसका सबसे ज्यादा नुकसान घरेलू उपभोक्ताओं को होगा और फायदा अघरेलू श्रेणी को मिलेगा। कृषि कनेक्शन इससे बाहर हैं।

Shri Infotech
कंम्प्यूटर, लेपटॉप, प्रिन्टर रिपेयर सुविधा।
नए- पुराने कंम्प्यूटर व लेपटॉप उपलब्ध।
1.Computer Hardware
2.Peripherals, Consumables
3. CCTV Camera
4. Sales & Service, Cartridge Refilling
Amit Pandya
M.92140-58393
Dwarkesh Market, Near Bus Stand Kankroli,
Distt. Rajsamand(RAJ) 313324
E-Mail : shri_infotech38@yahoo.co.in

दीपावली के पावन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं
मुकेश जोशी
अध्यक्ष, प्रताप ग्रामीण मंडल भाजपा, राजसमंद

महेन्द्र पालीवाल
पूर्व सरपंच- झालों की मदार, खमनोर, जिला- राजसमंद
Giriraj Paliwal
Mob. 9783369611
INDIAN OIL
Mahenra Paliwal
Mob. 9783369520
Shree Ram K.S.K.
INDIAN OIL DEALER
Village Jhalo Ki Madar, The.Khamnore,Dist. Rajsamand 313321
शुभ दिपावली

शुभ दीपावली
कुलदीपसिंह शेखावत
सिविल इंजीनियर
पूरणसिंह शेखावत
Govt. Contractor
C Class PWD, Municipal, Irrigation
अध्यक्ष नगरपरिषद कॉन्ट्रेक्टर्स एसोसिएशन राजसमंद

दीपावली महोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं
यदुनंदन मोदी (बबल)
देवांश मोदी
मोदी मेडिकल्स
जे.के. मोड शास्त्री मार्केट, कांकरोली मो. 9414239559, 8107130505

कवर स्टोरी

झील से ओवरफ्लो खुशियां

दिनेश श्रीमाली

समन्वयक, राजसमंद झील गोमती नदी संरक्षण अभियान, मो. 9414176733

बहुत लंबें अर्से बाद एक वर्ष के अंतराल बाद हमारी राजसमंद झील छलकी है, तो दीपावली का आनंद द्विगुणित हो चला है। इस झील को अगले वर्ष अपने निर्माण के 350 साल पूरे होने जा रहे हैं। रियासती शासन काल के आंकड़े तो उपलब्ध नहीं है, लेकिन आजादी के बाद 1957 से उपलब्ध सरकारी दस्तावेज यह बताते है कि 1973 की जबरदस्त वर्षा के बाद 1975 में यह झील एक साल के अंतराल बाद छलकी थी। करीब आधी सदी बाद यह अवसर आया है।

राजसमंद झील का निर्माण सन् 1676 में मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा राजसिंहसिंह ने अकाल से राहत देने के लिए किया था। करीब 3786 घनफीट भराव क्षमता वाली इस झील का मुख्य जलस्रोत गोमती नदी है। झील का मुख्य बंध नौ चौकी के नाम से विख्यात है। यहां सफेद संगमरमर से बनी इस पाल पर बनी छतरियां, तोरण की शिल्पकला अद्भुत है। यहां पर विश्व का सबसे बड़ा पत्थर पर राज प्रशस्ति खण्ड काव्य उत्कीर्ण है। झील में अतिरिक्त जल परावर्तन के लिए 1968 में खारी फीडर का निर्माण किया गया, जो बनास नदी पर बने नंदसमंद से राजसमंद झील में पानी भरती है।

अवैज्ञानिक खनन, वनों के विनाश के चलते इस झील की स्थिति सन् 2000 से 2006 तक मरणासन्न हो गई थी। गोमती नदी जलागम क्षेत्र नष्ट हो जाने से 1994 से 2006 तक सूखी पड़ी थी। तब इस क्षेत्र के सामाजिक पर्यावरण कार्यकर्ता दिनेश श्रीमाली की अगुवाई में राजसमंद झील, गोमती नदी संरक्षण अभियान प्रारंभ हुआ। अब तक 13 बड़े जन अभियान में 65 स्थान से अपशिष्ट निस्तारण किया गया। वहीं गोमती नदी प्रवाह क्षेत्र से हजारों टन मार्बल स्लरी निकाल जल प्रवाह सुनिश्चित किया गया। परिणाम स्वरूप 2006 के बाद औसत वर्षा में गोमती नदी में पानी आना प्रारंभ हुआ। करीब 42 वर्ष के लंबे अंतराल बाद यह झील 2017 में ओवरफ्लो हुई। गोमती नदी संरक्षण को लेकर चले जन अभियान के बाद अब औसत वर्षा में नदी में जल प्रवाह हो रहा है। वर्ष 2023 और आज यह झील फिर ओवरफ्लो हुई है, यह सुखद है।

झील में अतिरिक्त जल परावर्तन को बढ़ाने के लिए माही से पानी लाया जा सकता है। वहीं खारी फीडर विस्तार को लेकर 2023 से राज्य सरकार की घोषणा लंबित है। झील में बनास नदी का पानी नंदसमंद से खारी फीडर विस्तार के माध्यम से राजसमंद झील में पहुंचेगा। इसके लिए आवश्यक टेंडर प्रक्रिया और भूमि अवाप्ति का कार्य प्रगति पर है।

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सितंबर 2025 खारी फीडर विस्तार का शिलान्यास कर दिया है और 2028 तक यह कार्य सम्पन्न होगा। करीब सवा बत्तीस किमी इस फीडर की जल अपवर्तन क्षमता दोगुनी हो जाएगी। हमें यह समझना होगा कि राजसमंद झील का पानी पेयजल, सिंचाई, उद्योग और पर्यटन का आधार है। सभी स्तरों पर इसके सदुपयोग बहुत जरूरी है।

उम्मीद है मानसून आने वाले तीन वर्ष में माकुल रहेगा। फिर भी अतीत को ध्यान में रखते हुए शासन, समाज की पूर्व तैयारी भी जरूरी है। खारी फीडर विस्तार कार्य के दौरान नंदसमंद से जल अपवर्तन बाधित होगा, इसकी चिंता आम नागरिक, किसान और उद्योग सभी को करनी होगी। बूंद-बूंद का उपयोग, सिंचाई तंत्र की सुरक्षा, मरम्मत, पेयजलापूर्ति में मितव्ययिता और उद्योग को भी पानी बचत तकनीक का उपयोग करना होगा। सबसे अधिक चिंता हमारी सिंचाई तंत्र की लुंज-पुंज व्यवस्था है, जिससे करीब एक तिहाई पानी बर्बाद हो रहा है तो किसानों को भी सिंचाई में सजगता, सतर्कता के मानदंड स्वयं तय करने होंगे।

कवर स्टोरी

सोना कितना सोना है

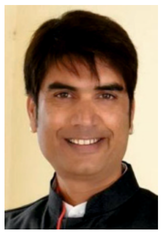

राहुल दीक्षित RD
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

प्राइवेट ऑफिस के क्लर्क मोहनलाल के तीन लड़कियां हैं, सबसे बड़ी छब्बीस वर्ष की है, जिसकी शादी हो चुकी है, दूसरी अभी तेईस वर्ष की है और पढ़ाई कर रही है, वहीं तीसरी सत्रह वर्ष की है, जो अभी स्कूल में पढ़ रही है। मोहन लाल की तनख्वाह साठ हजार रुपए है,पचास हजार रुपए घर खर्च, बच्चों की पढ़ाई और कुछ लोन की किस्त में खत्म हो जाते हैं, दस हजार रुपए मोहनलाल जैसे तैसे बचा लेता है, क्योंकि उसको पता है, अभी उसके सर पर दो बेटियों की शादी का बोझ है, मोहनलाल की पत्नी सुशीला अपनी बच्चियों को उच्च शिक्षा देकर अपने पैरों पर खड़ा करना चाहती है, लेकिन वह इस बात से भी चिंतित है कि उसकी बेटियों की शादी में अन्य खर्च के अलावा जो दहेज के नाम पर सोना दिया जाता है, आखिर उसकी व्यवस्था कैसे होगी और यह चिंता जायज भी है, क्योंकि आज के समय में सोने की बढ़ती कीमत से आज हर मध्यम वर्ग चिंतित नजर आ रहा है, इस कहानी में मोहनलाल और सुशीला और कोई नहीं है बल्कि आप और हम हैं, यह कहानी सभी मध्यवर्गी परिवारों की है।

भारत में विवाह जब होता है, तो उसमें दूल्हा दुल्हन को सोने के जेवर देने की प्रथा है, लेकिन आज के हालात में अगर देखा जाए तो मध्यम वर्ग पहले ही बढ़ती महंगाई से परेशान है, और उसमें सोने की अंधाधुंध बढ़ती हुई कीमतें उसे और ज्यादा परेशान कर रही है।

भारत का मध्यम वर्ग अपनी शानो शौकत के लिए सोने के जेवर नहीं खरीदता, बल्कि अपने बेटे-बेटियों के विवाह के लिए सोने के आभूषण खरीदता है, ताकि समाज में उनको हीन दृष्टि से नहीं देखा जाए, और उसका मान सम्मान बचा रहे। वह शादी के लिए कर्ज लेता है, और उस दो दिन की शादी के लिए जो उसने कर्ज लिया है उसको जिंदगी भर चुकाता रहता है, लेकिन आज के परिपेक्ष में हमें इस कुरिति के बारे में सोचना पड़ेगा, हमें समाज स्तर पर इस पर परिचर्चा करनी पड़ेगी, क्योंकि शादी विवाह में आज के समय में दिखावा इतना हावी हो गया है कि जिसके चलते एक विवाह के बाद वह पिता अपने परिवार में दूसरा विवाह करने के लिए बहुत ही चिंतित रहने लगता है। चिंता के कारण पूरे परिवार में एक अशांति का माहौल भी उत्पन्न होने लगता है। गृहक्लेश कई बार तो इतना बढ़ जाता है कि व्यक्ति आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जाता है और अगर इसके मूल में देखा जाए तो हमें समाज में अपना दिखावा ही नजर आता है।

इसके लिए अब हमें सामाजिक स्तर पर कुछ प्रयास करने होंगे जिसमें यह तय किया जाए की विवाह में कम से कम व्यय किया जाए। झूठी प्रतिष्ठा को दिखाने के चक्कर में आने वाले समय को अपने लिए दुखदाई ना बनाया जाए। विवाह में पाच ग्राम या दस ग्राम सोने के गहने से ज्यादा नहीं दिया जाए और हो सके तो सोने के जेवर देने का प्रचलन ही बंद कर दिया जाए। ताकि आने वाले समय में किसी मध्यम वर्ग के परिवार की लड़की या लड़के को सोने के आभूषणों की वजह से विवाह से वंचित न रहना पड़े।

अगर आपको भी यही लगता है की आने वाले समय में इस तरह विवाह में सोने के जेवरों का लेनदेन मध्यम वर्ग में विवाह का संतुलन बिगाड़ सकता है, तो सभी को सामाजिक स्तर पर इस पर मनन और चिंतन करना जरूरी होगा, क्योंकि इसका हल सामाजिक स्तर पर ही निकाला जा सकता है, नहीं तो आने वाले कुछ सालों में हम अपनी संस्कृति और सभ्यता को इस सोने के लेनदेन की वजह से खोते हुए नजर आएंगे।

कवर स्टोरी

उपहार की संस्कृति मानव मूल्यों की आधारशिला है

सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली
मो. 94146-21730

मानव संस्कृति सदियों से मूल्यों पर आधारित रही है। पुराने काल से वर्तमान युग तक सांस्कृतिक सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक, व्यापारिक सम्बध रिश्ते नैतिक मूल्य को आधार मान कर ही फलते फूलते रहे है। समाज ने कभी भी अनैतिकता को स्वीकार नहीं किया है, ना ही उसे सराहनीय पहलू माना है। दुनियाई रिश्तों का मूल्यांकन हमेशा से घनिष्ठ सम्बधों को मूल मानकर ही किया गया है। संबंधों में घनिष्ठता लाने के लिए व्यक्ति अनेक प्रकार के जतन करता है। शिष्टाचार लोक संस्कृति का केन्द्र रहा है, शिष्ट व्यवहार ही आदमी को विशिष्ट बनाता है और यही इंसानी रिश्तों की लौकिक पूंजी है। आदमी सामाजिक प्राणी है और समाज के बंधनों में बंधा हुआ है, मगर इन बंधनों की वज़ह से वो जीने के नित नए आयाम खोजता है।

दुनिया में कई संस्कृतियों का चलन है और उन संस्कृतियों के अनुसार ही उनके रीति -रिवाज है। भाषा बोलियां खान-पान, पहनावा सबका अलग अलग हो सकता है, मगर इंसानी जज्बा भावनाएं अहसास हमेशा से एक से ही होते है।

हर आदमी रिश्ते बनाने में विश्वास रखता है, बिगाड़ने में नहीं। रिश्तों का ये मायाजाल हमेशा से समाज और संस्कृति को मजबूती प्रदान करने में कारगर सिद्ध होता रहा है। ऐसा नहीं कि हर इंसान के रिश्ते हर इंसान से अच्छे ही हो, रिश्तों का ये तकाज़ा है कि वो बनते बिगड़ते रहते हैं। किसी का दुश्मन किसी का दोस्त भी होता है और किसी का दोस्त किसी का दुश्मन भी हो सकता है। कहते है दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है। दोस्ती और दुश्मनी के इस चक्रव्यूह में हर इंसान और सारी दुनिया फंसी रहती है, मगर जहां रिश्ते खराब हो, वहां हर इंसान रिश्ते सुधारने की कोशिश जरूर करता है और समाज भी रिश्तें सुधारने की वकालत करता है। क्योंकि बिगड़ते हुए रिश्ते व्यक्ति के लिए ही नहीं, अपितु देश काल और समाज के लिए भी घातक होते हैं। हर काल खण्ड नें रिश्तों के खराब होने की कीमत चुकाई है। इतिहास ऐसे कई उदाहरणों से भरा पड़ा है।

महाभारत की कथा एक ही राज परिवार के भाइयों के बीच खराब होते रिश्तों के घातक परिणाम की कथा है। स्वार्थ और परमार्थ का यह संघर्ष धर्म युद्ध में परिवर्तित हो गया था। आज के युग में हर दूसरे घर में एक महाभारत देखने को मिलती है, जहां निरन्तर सम्बंधों के बिगड़ते हालात ऐसी कहानी दोहरा रहे है, इंसान का अहम आज छोटे - छोटे स्वार्थो के कारण चरम पर है। कटुता का वातावरण समाज में सहज ही असहज रूप में उत्पन्न हो रहा है, हर आदमी शांति चाहता है मगर शांति के लिए भी क्रांति का सहारा लेना पड़े, तो ये मानव सभ्यता की जड़ों का खोखलापन ही होगा, जो किसी भी तुफ़ान में उसे धराशाही कर सकता है।

आज पूरी दुनिया फिर से विश्व युद्ध के कगार पर खड़ी है, उससे इन्कार नहीं किया जा सकता है। दुनिया के वर्तमान हालात किसी से छुपे नहीं है, जहां भारत विश्व बंधुत्व गुट निरपेक्ष और वसुधैव कुटुंबकम् और अंहिसा का पक्षधर है, वही दुनिया के कई देश गुटों में बंटकर विनाश पर आमादा है।

इसके जो भी परिणाम हो, ये भविष्य की गर्त में छुपे है, मगर भारत वर्ष सदियों से सनातन संस्कृति का पक्षधर रहकर मानव कल्याण की बात करता है। सुख और शांति, अमन प्रेम और भाइचारें की बात करता है, इसलिए लाख विपदा के बावजूद अपने अस्तित्व को बचाने में कामयाब रहा है।

हजारों साल की गुलामी को सहन

करते हुए जिस सहनशीलता का परिचय भारत ने दिया है, वो काबिले तारीफ है। युनान, रोम मिश्र सब मिट गए, कुछ बात तो है हममें कि मिटती नहीं हस्ती हमारी, सहनशीलता और संघर्ष की। इस कहानी के पीछे हमारे बहुआयामी आदर्श है, जो उपहार स्वरूप हमारे बुर्जुग पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत में हमारे लिए छोड़ गए है।

हमारी संस्कृति उपहार की संस्कृति रही है, उपहार देना और लेना मानवीय परम्परा है। इसे हम दान, जकात, गिफ्ट, भेंट आदि नाम से जानते हैं। भारतीय संस्कृति वैसे भी उपहास की संस्कृति नहीं, उपकार और परोपकार की संस्कृति रही है। बलिदान शब्द की उत्पत्ति भी राजा बलि के द्वारा दिए गए दान की वजह से हुई है। हम पुरानी कथाओं को आदर्श के रूप में देखे तो राजा बलि के दान की कथा जो भगवान श्री हरि विष्णु के वामन अवतार की कथा के संदर्भ से जुड़ी है, भगवान वामन ने तीन पग जमीन दान में मांगी। राजा बलि ने संकल्प ले उनकी बात स्वीकार कर ली, तब वामन ने विराट स्वरूप धारण कर एक पग में पृथ्वी, दूसरे में आकाश नाप लिया और बलि से बोले तीसरा पग कहा धरूं तो राजा बलि ने अपना शीश उनके चरणों में रख दिया। भगवान वामन ने श्री हरि विष्णु का रूप धारण किया व प्रसन्न हो राजा बलि को पाताल लोक का साम्राज्य दे दिया और वरदान दिया कि है ! राजन मेरी जब भी पूजा हवन यज्ञ होंगे, तो तेरे बिना नहीं होंगे। मेरी पूजा में तुम्हारा सदा विशिष्ट स्थान होगा, आज भी पूजा में ये मंत्र बोल मौली को बांधा जाता है-

"येन बद्धो बलि राजा दानवेन्द्रो महाबलः,
तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल"

ये मोली ही राजा बलि का प्रतीक है। राजा बलि नें जो उपहार श्री हरि को दिया वो बलि के दान के रूप में सदा के लिए अमर हो गया। इसी तरह मित्र सुदामा अपने सखा श्री कृष्ण द्वारकाधीश से मिलने द्वारका गए तो तीन

मुठ्ठी चावल पोटली में बांध कर उपहार स्वरूप ले गए, भगवान श्री कृष्ण नें दो मुठ्ठी चावल खाकर बिना मांगे ही सुदामा जी को दो लोक का साम्राज्य उपहार स्वरूप देकर उनकी गरीबी को दूर कर दिया।

एक कथा रामायण की भी है। रावण वध के बाद अवध आकर राजा राम का राज्याभिषेक हुआ, तब सीता माता ने प्रसन्न होकर सभी को उपहार बांटे, तब हनुमानजी को मोतियों की माला भेंट की, तो वो मोती तोड़ तोड़ कर देख रहे थे, हनुमानजी कि ये लीला किसी को समझ नहीं आई, तब श्री रामजी ने उत्सुकतावश हनुमानजी से पूछा कि ये क्या कर रहें हो, तब हनुमान जी बोले प्रभु, मैं सिया राम की छवि इसमें ढूढ़ रहा हूं, जो इस काठ की माला में नहीं मिल रही है, मेरे तो रोम रोम में सिया राम बसे है, वो इसमें क्यों नहीं है और अपनी छाती चीर सिया राम के सभी को दर्शन कराएं।

चीर के छाती अपनी बोले पवन पुत्र हनुमान
मेरे तन में राम, मन में राम, रोम रोम में राम।

देश काल और परिस्थिति अनुसार उपहार का बहुत महत्व रहा है ,राजा महाराजा विद्वानों कवियों कलकारों ब्राह्मणों चारण भाटों को उनकी विद्वता और कला से प्रसन्न होकर के उपहार दिया करते थे। हीरे जवाहरात, आभूषण और जमीन, जायदाद उपहार रूप में दान में देने की परंपराएं रही है। मेवाड़ की मां पन्नाधाय ने तो मेवाड़ के राजवंश के कुल को बचाने के लिए अपने बेटे चंदन का बलिदान देकर मेवाड़ को भेंट स्वरूप इतना बड़ा उपहार दिया है कि मां पन्नाधाय अमर हो गई। भामाशाह ने भी संकट की घड़ी को देखते हुए महाराणा प्रताप को अपनी सारी संपत्ति दान स्वरूप उपहार में भेंट कर दी और उनसे हथियार खरीद कर महाराणा प्रताप ने अकबर की सेना से युद्ध लड़ा और मेवाड़ को गुलामी से मुक्त रखा। इतिहास के पन्ने खंगाले तो हजारों ऐसे उदाहरण मिलेंगे। उपहार और उपकार की संस्कृति ही मानव मूल्य की संस्कृति है। तीज, त्यौहार, शादी, ब्याह में उपहार देने लेने की परंपरा रही है।

नरसी भगत की कथा में नानी बाई के मायरे में उपहार भेंट कर भगवान श्री कृष्ण नें समाज में मायरा, भात भरने की परम्परा को समाज में जन्म दिया और बहन भाई के प्रेम को अमर कर दिया।

उपहार राष्ट्रों के संबंध सुधारने में भी बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। एक दूसरे के राष्ट्राध्यक्ष जब मेजबान या मेहमान के रूप में जब मिलते हैं, तो एक दूसरे को भेंट स्वरूप उपहार देते हैं। हमारे प्रधानमंत्री जब भी किसी देश में जाते हैं, तो वहां के राष्ट्रध्यक्ष को श्री भागवत गीता उपहार स्वरूप भेंट कर भारतीय दर्शन को दुनिया तक पहुंचाते हैं।

प्रकृति और परमात्मा ने भी देव दानव और मानव जाति को बहुमूल्य उपहार दिए है। देवासुर संग्राम के वक्त हुए समुन्द्र मंथन में उपहार स्वरूप रत्न प्राप्त हुए थे, देवताओं और असुरों के बीच समुद्र - मंथन में रस्सी का काम शेषनाग के किया था। समुद्र मंथन में कुल 14 रत्न निकले थे, वो इस प्रकार है। कालकूट विष, ऐरावत हाथी, कामधेनु गाय, उच्चैः श्रवा घोड़ा, कौस्तुभ मणि, कल्पवृक्ष, रंभा अप्सरा, महालक्ष्मी, वारुणी मदिरा, चंद्रमा, शारंग धनुष, पांचजन्य शंख, धन्वंतरि, और अमृत, ये रत्न समृद्धि, ज्ञान और शक्ति के प्रतीक माने जाते हैं। कालकूट विषः सबसे पहले निकला हुआ विष, जिसे भगवान शिव ने अपने कंठ में धारण किया था, ऐरावत हाथीः इंद्र का वाहन, जो सफेद रंग का था, कामधेनु गायः इच्छित वस्तुएं प्रदान करने वाली गाय, जिसे ऋषियों को दे दिया गया, उच्चैःश्रवा घोड़ाः सात मुख वाला, मन की गति से चलने वाला घोड़ा कौस्तुभ मणिः एक अनमोल मणि, कल्पवृक्षः स्वर्ग का एक वृक्ष जो सभी इच्छाओं को पूरा करता है। रंभा अप्सराः एक दिव्य अप्सरा महालक्ष्मीः धन और समृद्धि की देवी वारुणीः मदिरा की देवी चंद्रमाः शीतलता और शांति का प्रतीक शारंग

धनुषः भगवान विष्णु का धनुष पांचजन्य शंखः भगवान विष्णु का शंख धन्वंतरिः आयुर्वेद के देवता, जो अमृत लेकर निकले अमृतः जीवनदायक अमृत है, प्रकृति ने भी हमें पांच तत्व उपहार में दिए है, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। इन्हीं पांच तत्वों से हर जीव की उत्पति हुई है, इन्हीं से जीवन चक्र प्राण वायु निकलने तक चलता रहता है।

हम बात करें तो वर्तमान समय में उपहार शिष्टाचार का परिचय ही नहीं है, चापलूसी, चमचागिरी, भ्रष्टाचार व बड़े बड़े लोगों को खुश करने का साधन भी बन गया है। बड़े बड़े उद्योगपति, व्यापारी, नेताओं और अफसर लोगों को ये लालच देकर के आसानी से अपना उल्लू सीधा कर लेते है, यह कु-संस्कृति दुनिया के कई देशों में है। आम आदमी की भी यह प्रवृति रहती है कि वो खास आदमी को खुश करने के प्रयास करता है। हम अक्सर अपने से छोटे लोगों को कम उपहार व अपने से बड़े लोगों को अपने सामर्थ से भी अधिक उपहार देकर आदर सत्कार का भाव प्रकट करते हैं। बड़े और नामचीन प्रसिद्ध लोगों से मिलते या भेंट करने जाते वक्त अच्छे व अधिक उपहार या भेंट ले जाते हैं, हमारा मकसद यही रहता है, बड़ा आदमी किसी भी तरह खुश हो और हम उनसे लाभ के अवसर पाते रहे।

आज के जमाने में आदर्श और सिद्धान्तों से ज्यादा स्वार्थ के मायने है और हर आदमी अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए उपहारों का सहारा लेता है। वैसे अच्छाई और बुराई के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष समाज में सदा रहे हैं, मगर उपहारों का चलन संसार में सदा रिश्ते सुधारने व बनाने में उपयोगी सिद्ध हुआ है। लोकाचार की यह प्रवृत्ति हमेशा सहयोगी रही है। आदर, स्वागत और सत्कार बिना उपहार के अधूरा है। सही समय पर दिया गया उपहार जीवनभर याद रहता है।

इसलिए शादी, विवाह, तीज, त्यौहार व विशेष अवसरों पर अपने परायों द्वारा उपहार दिए और लिए जाते रहे हैं। दीपावली के पावन पर्व पर खुशियों के उपहार स्वरूप किसी गरीब व असहाय की मदद कर उसके जीवन में उजियारा कर सके, तो यह हमारे जीवन की बड़ी उपलब्धि होगी। हमारा ये संकल्प मानव कल्याण की राह में जलाएं दीपक के समान होगा, जो हमारे जीवन को भी तार देगा, त्याग समर्पण और सेवा का यह उपहार मानव सभ्यता संस्कृति और संस्कार की आधारशिला और मानवता के मंदिर का शिखर कलश बन जाएगा और यह प्रकल्प सभी के लिए मंगलकारी व अनुपम समाज सेवा जैसा होगा।

दीपावली के पावन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं
चुन्नीलाल पंचोली
उप सभापति, नगर परिषद राजसमंद

माँ लक्ष्मी का आशीर्वाद आप पर बना रहे,
घर में सुख-समृद्धि और शांति सदा बसे।
दामोदर गुर्जर
राजसमंद सासंद कांग्रेस प्रत्याशी

शुभ दीपावली
अशोक रांका
पूर्व सभापति एवं पूर्व जिला
उपाध्यक्ष भाजपा, राजसमंद

शुभ दीपावली
डॉ. राम मीणा
वरिष्ठ नेता भारत आदिवासी पार्टी, कुंभलगढ़, जिला- राजसमंद

दीपोत्सव की क्षेत्रवासियों
को हार्दिक शुभकामनाएं
सुरेश पालीवाल
पूर्व सभापति, नगर परिषद राजसमंद

शुभ दीपावली
समाजसेवी व कॉन्ट्रेक्टर PWD
नाथद्वारा, जिला- राजसमंद
राजकुमार खटीक
शांतिलाल खटीक

छोटी सी मदद कर बने राहवीर, सरकार देगी 1 लाख तक इनाम, पीड़ित की दुआ अपार

राजकुमार दक
पूर्व मानद सचिव
भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी एवं
समन्वयक प्रबुद्ध नागरिक विचार मंच

वर्तमान में देश में बढ़ रही सड़क दुर्घटनाएं अत्यंत चिंता का विषय है। आए दिन होने वाली दुर्घटनाओं के कारण अनेक घरों के चिराग बुझ रहें हैं, बावजूद हम इसके प्रति गंभीर नहीं है। सरकारी स्तर पर कई उपाय किए जा रहे हैं, लेकिन जब तक पैदल चलने वाले व्यक्ति से लगाकर वाहन चालक तक हर व्यक्ति जब तक स्व अनुशासित नहीं होगा, तब तक सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम एवं इसमें होने वाले घायलों के बचाव के लिए किए जा रहे उपाय भी प्रभावी नहीं होंगे। आज का युवा जोश तो रखता है, लेकिन होश नहीं रख पा रहा है एवं यही कारण है कि प्रतिदिन दुर्घटनाओं में अनेक युवा मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं, तो कई युवा के द्वारा यातायात नियमों की धज्जियां उड़ाते हुए कई लोगों को चोटिल करने की घटनाएं सामने आ रही है। हमारा दायित्व बनता है कि हम सड़क सुरक्षा बनाए रखने के लिए यातायात नियमों का पालन करें एवं वाहनो को नियंत्रित गति से चलाए। वाहन चलाते समय सतर्क एवं सजग रहें।

किसी ने ठीक ही कहा है कि जब आप वाहन चलाते हैं, तब यह मानकर चले कि सामने वाला व्यक्ति दृष्टि बाधित, श्रवण बाधित एवं मानसिक रूप से कमजोर है और जो कुछ भी ध्यान रखना है, वह मुझे ही रखना है, तो संभवतः आपसे कोई दुर्घटना नहीं होगी एवं न ही आप दुर्घटनाग्रस्त होंगे।

सड़क दुर्घटना में घायलों के बचाव के लिए आम नागरिक का सहयोग महत्वपूर्ण हो सकता है। कहीं यदि कोई दुर्घटना हो जाए तो आम नागरिक सेवा भावना रखें, तो अनेक लोगों की जान बचाई जा सकती है। मेरे जीवन में ऐसे अनेक प्रसंग आए, जब कहीं भी दुर्घटना देखी, वहां छोटा सा सहयोग किया तो कई जीवन बच गए। 25 वर्षों तक भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी के मानद सचिव एवं संयुक्त मानद सचिव का पद दायित्व संभालने के दौरान एंबुलेंस सेवा का जिस तत्परता से संचालन करवाया, वह सर्वविदित है। यह सेवा कार्य मुझे जीवन पर्यंत सुखानुभूति करवाता रहेगा।

इस दौरान मैंने पाया कि जहां कहीं भी दुर्घटना होती है, तो लोग तमासबिन बनकर रह जाते हैं। कोई वीडियो बनाता है, तो कोई भीड़ का हिस्सा बनकर बचाव कार्य एवं यातायात को बाधित करते हैं। कई बार तो लोग इस तरह इकट्ठे हो जाते हैं कि दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की सार संभाल भी ढंग से नहीं हो पाती है। कई बार घायल को जो सहायता हम दे सकते है, वह तो देते नहीं और सारा दोष पुलिस एवं प्रशासन के माथे मढ़ दिया जाता है, जबकि बचाव, दुर्घटना को प्रथम देखने वाले व्यक्ति के हाथ में सर्वाधिक होता है। दुर्घटना होने पर तुरंत पुलिस को पुलिस कंट्रोल रूम पर 100 नंबर पर सूचना दें, एंबुलेंस के लिए 108 नंबर का उपयोग करें, लेकिन एंबुलेंस का अत्यधिक इंतजार नहीं करें। जो भी साधन उपलब्ध हो अथवा स्वयं का वाहन हो, तो उसमें मरीज को लेकर सीधे चिकित्सालय पहुंचे। यदि आपके पास चिकित्सालय के फोन नंबर हो तो उस नंबर पर फोन पर सूचना दे देवे, ताकि घायल को तुरंत उपचार मिल सके। आप कभी यह नहीं सोचें कि पुलिस कार्रवाई में आपको कोई भी परेशानी होगी। वर्तमान नियमों में पुलिस कार्रवाई से पूर्व रोगी का उपचार एवं बचाव प्रमुखता रखता है। जब कहीं भी दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को राहत पहुंचाने का कार्य पड़े, तो ध्यान रखें कि

पीड़ित व्यक्ति को बलपूर्वक नहीं खींचे एवं उठाते वक्त सावधानी रखें। उसके पांव एवं कंधों पर सहारा देकर उठाएं, कमर में भी हाथ रखें। घायल व्यक्ति के फ्रैक्चर हो तो लकड़ी की स्केलनुमा पट्टी अथवा अखबार को लंबा मोड़कर पट्टी की तरह सीधा बांधकर घायल व्यक्ति को स्थिर करें। गंभीर रक्त स्राव है तो घाव पर कपड़े की पट्टी बांधे। यदि पीड़ित सांस नहीं ले पा रहा है हो तो सीपीआर देनी चाहिए, लेकिन यह तभी देनी चाहिए, जब आप इसके जानकार हो एवं प्रशिक्षित हो। आजकल कई संस्थाओं द्वारा सीपीआर प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, लेकिन पूर्ण कुशलता प्राप्त करने में समय लगता है। अतः इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि आप यह करने हेतु पूर्ण रूप से प्रशिक्षित है एवं सक्षम है। मरीज को सदमे में न जाने दें। उसे आश्वस्त करें कि सब कुछ कुशल हो जाएगा। किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाए तो उसकी जानकारी घायल व्यक्ति को नहीं दे। चिकित्सक की अनुमति के बिना भोजन अथवा पानी नहीं देवें।

आमजन को चाहिए कि सड़क दुर्घटनाओं के समय घायल व्यक्तियों की मदद करने से हिचकिचाएं नहीं। आपका यह छोटा सा प्रयास किसी की जान बचा सकता है और सरकार की ओर से सम्मान एवं पुरस्कार भी दिला सकता है।

सड़क दुर्घटना में गंभीर घायलों की मदद के लिए भारत सरकार ने राहवीर (गुड सेमेरिटन) योजना जारी की है, जिसके तहत मदद करने वाले को 25000 का केश अवार्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय भारत सरकार के सड़क सुरक्षा प्रकोष्ठ ने 21 अप्रैल 2025 को घातक सड़क दुर्घटनाओं में गोल्डन ऑवर (दुर्घटना के बाद 1 घंटे की अवधि) अवधि में सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल ऐसे व्यक्ति जिन्हें मेजर सर्जरी, तीन दिवस तक भर्ती रहने वाले ब्रेन इंजरी, स्पाइनल कॉर्ड इंजरी एवं इलाज के दौरान मृत्यु हो जाने वाले घायलों को ले जाने वाले भले व्यक्ति, जिन्हें इस योजना के तहत राहवीर (गुड सेमेरिटन) नाम दिया गया है, को मोटर वाहन अधिनियम 1981 की धारा 134 ए एवं भारत सरकार की गुड सेमेरिटन हेतु जारी अधिसूचना 29 सितंबर 2020 के तहत संरक्षण प्रदान करते हुए ऐसे व्यक्तियों को 25000 की नगद राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रत्येक घातक सड़क दुर्घटना में घायलों की मदद करने वाले को 7 दिन के अंदर-अंदर दी जाएगी। एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा घायलों की मदद करने पर यह राशि समान रूप से वितरित की जाएगी। प्रशस्ति पत्र सभी को दिए जाएंगे। एक व्यक्ति वर्ष में अधिकतम पांच बार यह केश अवार्ड प्राप्त कर सकेगा। राज्य स्तरीय मॉनिटरिंग कमेटी, जिसके अध्यक्ष प्रमुख शासन सचिव गृह तथा सदस्य सचिव परिवहन आयुक्त होते हैं।

इस कमेटी में आयुक्त चिकित्सा विभाग एवं अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक यातायात सदस्य होते हैं। जिला स्तर पर गठित कमेटी में जिला मजिस्ट्रेट, पुलिस अधीक्षक, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी तथा आरटीओ सदस्य होते हैं। राह -वीर को अस्पताल में अपना नाम, मोबाइल नंबर, घटनास्थल का विवरण, बैंक खाता डिटेल देनी होगी। जिस पुलिस थाना क्षेत्र में दुर्घटना हुई उनका प्रमाण पत्र तथा जिस अस्पताल में भर्ती करवाया गया, उस अस्पताल का प्रमाण पत्र संलग्न करना होगा। राज्य स्तरीय कमेटी प्रतिवर्ष तीन व्यक्तियों के नाम भारत सरकार को राष्ट्रीय गुड सेमेरिटन अवार्ड के लिए भेजेगा। भारत सरकार राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के दौरान 1,00,000 की राशि, प्रशस्ति पत्र से राष्ट्रीय गुड सेमेरिटन अवार्ड दिया जाएगा।

राजस्थान सरकार द्वारा मुख्यमंत्री आयुष्मान जीवन रक्षक योजना के तहत 10,000 की राशि व प्रशस्ति पत्र गुड सेमेरिटन व्यक्ति को दे रहे है। आमजन से अपेक्षा है कि सड़क दुर्घटना पर कितना भी आवश्यक कार्य हो रुककर घायलों को तत्काल नजदीकी अस्पताल में लेकर राह वीर बने और सरकार की योजना के तहत कैश अवार्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त करें तथा पीड़ित परिवारों की दुआ प्राप्त करें।

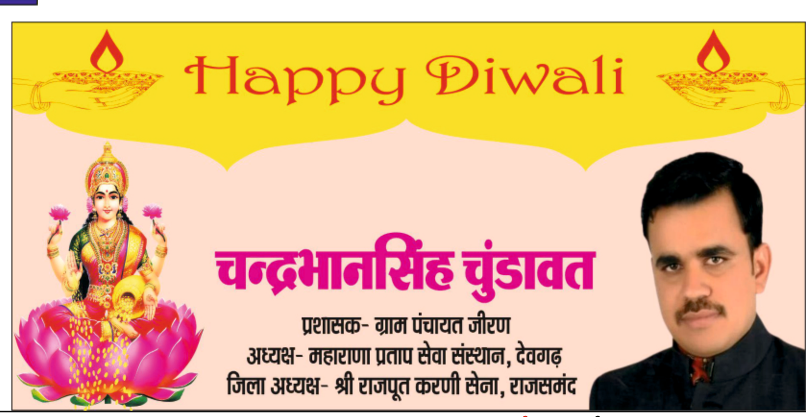

जनरेशन Z

नई पीढ़ी, नई सोच, नई अपेक्षाएं

अन्नु राठौड़ 'रुद्रांजली'
काव्य गोष्ठी मंच, राजसमंद
मो. 95497-13341

जनरेशन यानी पीढ़ियां, समय बदलता रहता हैं और बदलते समय के साथ बदलती रहती हैं पीढ़ियां। ऐसे ही बदलते समय की बदलती हुई पीढ़ियां है, जिसमें सबसे पहली पीढ़ी है, ग्रेटेस्ट जेनरेशन (1901 से 1927) और दूसरी है साइलेंट जेनरेशन (1928-1945), तीसरी हैं बेबी बूमर्स (1946-1964), चौथी है जेनरेशन एक्स (1965-1980), पांचवीं हैं मिलेनियल्स या जेन वाई (1981- 1996) और आज के समय में दुनिया में एक नई पीढ़ी उभरी हैं 'जेन जी' - इस पीढ़ी में 1997- 2012 के बीच जन्म लेने वाले लोगों को शामिल किया गया।

यह वह पीढ़ी है, जो डिजिटल दुनिया में जन्मी, पली बढ़ी हुई है, इन्हें डिजिटल दुनिया को नेविगेट करना आता है। ये वो पीढ़ी है, जिन्होंने ज़मीनी दुनिया से ज्यादा सोशल मीडिया, स्मार्टफोन और इंटरनेट के जरिए दुनिया को देखा है। जेन जेड़ बाकी सभी पीढ़ियों से अलग है, क्योंकि उनकी सोच, उनके सपने, उनकी जीवनशैली और उनकी अपेक्षाएं बाकी पीढ़ियों से भिन्न हैं। ये वो पीढ़ी है, जो सपने देखती हैं और उनको हक़ीक़त बनाने की भी पूरी कोशिश करती हैं। ये वो पीढ़ी है जो हार्डवर्क से ज्यादा स्मार्ट वर्क करना पसंद करती हैं।

Gen Z की सोच पुरानी पीढ़ियों से अलग है। यह आत्मनिर्भर आत्मविश्वासी और निडर पीढ़ी है। इनके लिए सफलता का अर्थ केवल ऊँची तनख्वाह या बड़ा पद नहीं, बल्कि काम में उद्देश्य, संतोष, आत्म संतुष्टि और सकारात्मक प्रभाव है। 'यह पीढ़ी खुद पर भरोसा करती है सवाल पूछती है और पुराने नियमों को चुनौती देने से नहीं डरती।

डिजिटल युग के बादशाह

Gen Z ने अपना जीवन स्मार्ट फोन और इंटरनेट के बीच जिया हैं। इंटरनेट या सोशल मीडिया को यदि हम इनके लिए हवा पानी जैसा जरूरी समझे तो भी इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यह पीढ़ी तकनीक-संपन्न तो है ही, साथ ही ये जागरूक और सामाजिक मुद्दों पर सक्रिय भी मानी जाती है। ये ज़िलेनियल्स भी कहे जाते हैं। ये आज के समय की सबसे चर्चित और प्रभावशाली पीढ़ी है। टेक्नोलॉजी उनके डीएनए में है, वो नए ऐप्स और ट्रेंड्स को बहुत तेजी से अपनाते हैं। Gen-Z डेस्कटॉप के बजाय मोबाइल पर ही ज्यादा काम करते हैं। ये आम जीवन की टिप्पणियों से ऑनलाइन रिव्यू पर ज्यादा भरोसा करते हैं। Gen Z के लिए डिजिटल दुनिया एक वास्तविकता है, न कि एक विकल्प।

आत्मनिर्भरता, रचनात्मकता

जेन जेड़ के पास रचनात्मकता अन्य बाकी सभी पीढ़ियों की तुलना में अधिक हैं। ये लोग अपने विचारों, योग्यताओं और यहां तक कि अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए सोशल मीडिया का ही प्रयोग करना पसंद करते हैं। लेखन क्षेत्र हो या गायन, नृत्य हो या पाक, कला हो या विज्ञान से संबंधित रचनात्मकता सभी के लिए ये पीढ़ी सोशल मीडिया और इंटरनेट पर बहुत अधिक आश्रित हैं। ये पीढ़ी

रेस्टोरेंट में हो या किसी पर्यटन स्थल पर, किसी मंदिर या किसी शोक कार्यों में, अपने हर कार्य को सोशल मीडिया के जरिए लोगों को बताना, उनकी प्रतिक्रियाएं देखना अति आवश्यक लगता हैं।

विविधता व समावेशिता

जेन जेड़ अलग अलग विचारधाराओं, संस्कृति, धर्मों का सम्मान करते हैं। यह पीढ़ी विविधता और समावेशिता को बहुत महत्व देते है। जेन जेड़ के लिए यह जरूरी है कि हर किसी को समान अवसर मिले और समाज में किसी भी तरह का भेदभाव न हो। ये लोग सामाजिक न्याय के लिए भी बहुत मुखर हैं और अपने विचारों को व्यक्त करने से नहीं हिचकिचाते। ये मुक्त वक्ता होने के साथ ही बहुआयामी प्रतिभाओं के धनी होते हैं।

जीवन की चुनौतियां

यह पीढ़ी तकनीकी और प्रौद्योगिकी में बहुत सफलता प्राप्त कर चुकी हैं, लेकिन इनके जीवन में चुनौतियां भी कम नहीं हैं। जिसमें सबसे बड़ी चुनौती है नौकरी की अनिश्चितता, आर्थिक अस्थिरता, कठिन प्रतियोगिताएं लेकिन बहुत कम अवसर और रोजगार। जिसके कारण इस पीढ़ी के 70 प्रतिशत लोग मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद से घिरे हुए है। यह पीढ़ी छोटी से छोटी गणना के लिए भी मोबाइल कैलकुलेटर पर आश्रित है। ये मीलों दूर बैठे अपने सोशल मीडिया के मित्र को देख सकते, सुन सकते हैं और बात कर सकते हैं। लेकिन अपने ही घर के लोगों या पड़ोस के लोगों से दूर होते जा रहे। मोबाइल और इंटरनेट जो कि साधन या सुविधा के रूप में प्रयोग करने के लिए

था, किंतु इस पीढ़ी के लिए लत बन गई है।

जेन जेड़ की अपेक्षाएं

इस पीढ़ी की रचनात्मकता, विविधता के प्रति सम्मान, हर चुनौती का सामना करने का हौंसला, रूढ़िवादी सोच को चुनौती देना, इनका बेबाक और निडर होना इन्हें एक अद्वितीय पीढ़ी बनाती हैं, ये पीढ़ी अपनी नई ऊर्जा व नई सोच के साथ दुनिया बदलने की क्षमता रखती हैं। ऐसे में ये पीढ़ी चाहती हैं, उन्हें समझा जाएं, उनके नजरिए और सोच को स्वीकारा जाए। ये पीढ़ी ऐसे समाज की कल्पना करती हैं, जो सबको समान अवसर दें, सभी की सोच को सम्मान दें। इनकी सोच पुरानी बाकी सभी पीढ़ियों से अलग है, इनके लिए सफलता का अर्थ केवल बड़ी तनख्वाह या बड़ा पद नहीं, बल्कि ये पीढ़ी काम के पीछे कोई उद्देश्य, आत्म संतुष्टि और सकारात्मक प्रभाव ढूंढती हैं। यह पीढ़ी पूरी तरह से तकनीकी और डिजिटल मीडिया से घिरी हुई है। ऐसे में यह पीढ़ी चाहती है कि उनके परिजन और समाज उनकी नई डिजिटल सोच को अपनाएं और कदम मिला कर उनके साथ चले, उनका हौंसला बढ़ाएं, उनके सपनों को पहचाने और मंजिल तक पहुंचने में उनकी मदद करें। इस पीढ़ी की पुरानी पीढ़ियों से सबसे बड़ी अपेक्षा यह है कि यह चाहती है कि रूढ़िवादी सोच को छोड़कर, नए विचारों, नई ऊर्जा, नई प्रतिभाओं को अवसर दिया जाए, कुछ नया कर दिखाने का। इस पीढ़ी को अपने परिजनों और समाज से अपेक्षाएं है कि उन्हें सुना और समझा जाएं।

समाधान की ओर...

यह पीढ़ी जो सोशल मीडिया के लाइक, कॉमेंट्स को अपनी जीवन की सच्चाई समझती है, उसका एक पहलू केवल तकनीकी दुनिया के प्रति उनका आकर्षण भी है, वरन दूसरा पहलू यह भी है कि इस भागम-भाग भरी दुनिया में माता पिता अपने बच्चों से दूर होते जा रहे हैं और यही कारण है कि जो पीढ़ी तकनीकी और इंटरनेट का सदुपयोग करके क्या कुछ नहीं कर सकती थी, वह होनहार पीढ़ी केवल सोशल मीडिया, व्हाट्सप्प, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर में उलझ कर रह गई। जो ज़मीनी हकीकत से इतनी दूर निकल गए कि शिक्षक और गुरु का स्थान उन्होंने गूगल और इंटरनेट को दे दिया हैं। जहां अथाह ज्ञान के साथ साथ कई मार्ग भटकाने वाले साधन भी हैं। इन परिस्थितियों में हमारा परम कर्तव्य है कि हम उन्हें सही- गलत का अर्थ समझाएं, न की अपनी सोच और बंदिशे उन पर लाद दें। ये पीढ़ी संवेदनहीन होती जा रही है, तो आवश्यकता है कि इनके साथ सभी मित्रवत व्यवहार करें व इनकी भावनाओं को समझा जाएं।

अतः इस अद्वितीय पीढ़ी को ऊंचाइयों के शिखर तक पहुंचाने के लिए पुरानी पीढ़ियों का कर्तव्य बनता है कि वह इस पीढ़ी के युवाओं को समझे, अपने विचारों के साथ उनके विचारों को प्रकट करने की स्वतंत्रता दे।

चिंतन

त्यौहार या तमाशा?.... दिखावा

वीणा वैष्णव 'रागिनी'

साहित्यकार, काव्य गोष्ठी मंच

त्यौहार, जो कभी परिवार और आस्था का प्रतीक थे- आज केवल रील्स, वीडियो और लाइक्स का बहाना बन गए हैं। अब तीज, करवा- चौथ, दीपावली या होली का असली मजा कहीं खो सा गया है। अब हर त्यौहार प्रदर्शन का मंच बन गया है।

अनपढ़ औरतें जानकारी के अभाव में देखा-देखी कर रही हैं। उन्हें समाज का चलन और दिखावे के पीछे भागते देखना सामान्य लगता है, लेकिन सबसे ज्यादा क्षति समाज की इन पढ़ी-लिखी और पैसे वाली औरतों ने पहुँचाई है, जो समाज में आदर्श मानी जाती थीं। ज्ञान और अनुभव में सक्षम होते हुए, उन्होंने अपने बच्चों और युवाओं को यह सिखाया कि संस्कार अब केवल पुराने जमाने की बातें हैं, दिखावा ही सब कुछ है। बुजुर्गों का सम्मान अब केवल नाम मात्र रह गया है। परिवार में अकेले रहना पसंद करना,

अपनी मर्जी से जीना और पाश्चात्य संस्कृति को अपनाना, यह नया फैशन बन गया है।

घर के बुजुर्ग अब केवल तस्वीरों और कहानियों में मौजूद हैं, जिनके अनुभव और सीख अब किसी के काम नहीं आते। त्योहारों का स्वरूप भी बदल गया है। तीज, करवा चौथ, दीपावली, अब ये केवल सैल्फी, वीडियो और सोशल मीडिया स्टोरीज़ बनकर रह गए हैं। जो कभी परिवार और समाज को जोड़ते थे, अब वही रिवाज प्रतियोगिता और दिखावे का कारण बन गए हैं। सोचिए, क्या अब कोई वास्तव में हृदय से त्योहार मनाता है? या अब हर त्यौहार केवल कैमरे और दर्शकों के लिए सजाया जाने वाला मंच बन गया है?

समाज में बदलाव की जरूरत है। दिखावा और सोशल मीडिया की दौड़ केवल क्षणिक खुशियाँ देती है, जबकि संस्कार और आस्था पीढ़ियों तक मार्गदर्शन करती हैं। यह केवल बुजुर्गों का काम नहीं, अब युवा और पढ़ी-लिखी महिलाएँ भी जिम्मेदार हैं। उन्हें दिखावे और लाइक्स के पीछे दौड़ने की जगह, अपने बच्चों और समाज को सही दिशा दिखाना चाहिए। यदि हमने अभी भी नहीं सुधारा, तो आने वाली पीढ़ियाँ त्योहारों की जगह डिजिटल प्रदर्शन देखेंगी। दीपावली केवल रोशनी की फोटो, करवा-चौथ केवल चांद की सेल्फी, होली केवल रंगों का वीडियो और इस बीच, आस्था, श्रद्धा और परंपरा बस नाम की रह जाएँगी। समाज और परिवार की जिम्मेदारी है कि बच्चों को यह समझाएँ कि सच्चा त्योहार वह है जिसमें दिल से आस्था और भावनाएँ शामिल हों, न कि केवल कैमरे और सोशल मीडिया के लिए सजावट।

आज का युवा अक्सर केवल बाहर की दुनिया की तरफ आकर्षित होता है। लेकिन अगर हम समय रहते मार्गदर्शन और संस्कार दें, तो वह समझेगा कि त्योहारों का असली आनंद दूसरों को खुश देखकर और परिवार के संग बिताने में है, न कि सिर्फ वीडियो और लाइक्स में। अगर समाज, खासकर पढ़ी-लिखी औरतें, अभी सुधार के लिए नहीं उठीं, तो आने वाली पीढ़ियाँ केवल डिजिटल प्रदर्शन और दिखावे की गुलाम बन जाएंगी। समय है- रिल्स और लाइक्स से परे जा कर त्योहारों का असली अर्थ समझने और बच्चों को सिखाने का। याद रखिएः तीज-त्योहार सिर्फ नाम के लिए नहीं होते। यदि हमने अभी भी नहीं सुधारा, तो आने वाले कल में संस्कार और आस्था सिर्फ पुरानी किताबों और तस्वीरों में ही जीवित रहेंगे।

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं
कुकसिंह गौड (सगरूण)
जिला परिषद सदस्य राजसमंद

शुभ दीपावली
लक्ष्मण गुर्जर
अध्यक्ष- द खण्डा क्रेजी ट्रक-टेलर एसोसिएशन, केलवा- राजसमंद

शुभ दीपावली
सुरेन्द्रसिंह राठौड़
विधायक, कुंभलगढ़
महिमा कुमारी मेवाड़
सासंद, राजसमंद
कैलाश चंद्र सुथार
भाजपा मंडल अध्यक्ष एवं ग्राम
सेवा सहकारी समिति अध्यक्ष,
लावा सरदारगढ़, आमेट, जिला- राजसमंद

दीपोत्सव की समस्त
क्षेत्रवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
अरविन्दसिंह राठौड़
प्रधान-पंचायत समिति राजसमंद

राजसमंद सहकारी उपभोक्ता थोक भंडार लिमिटेड, राजसमंद
शुभ दीपावली
उचित दाम
अच्छी गुणवत्ता
शुद्धता की गारंटी
पीयूष त्रिपाठी
चेयरमैन
जिले में सहकारी दवाघर आरके जिला अस्पताल, कमला नेहरू अस्पताल कांकरोली,
सिटी डिस्पेंसरी राजनगर, गोवर्धन सामान्य अस्पताल नाथद्वारा
सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आमेट, देवगढ़, भीम, कुंभलगढ़, रेलमगरा, खमनोर
विनोद कोठारी
महाप्रबंधक

समझ

1 यूनिट ब्लड से बच सकती है 3 जिंदगियां, राजसमंद में 10 हजार रक्तदाता सदैव तत्पर

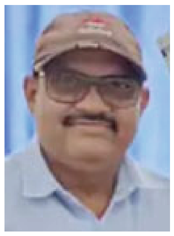

बृजलाल कुमावत
मानद सचिव
रेडक्रॉस सोसायटी राजसमंद
मो. 94146-84072

रक्तदान एक ऐसा मानवीय कार्य है, जिससे न सिर्फ किसी जरूरतमंद को नई जिंदगी मिलती है, बल्कि दान करने वाला व्यक्ति भी एक सच्चा "हीरो" बन जाता है। आज भी देश में लाखों मरीज ऐसे हैं जिन्हें दुर्घटना, सर्जरी या गंभीर बीमारियों के इलाज के दौरान रक्त की जरूरत पड़ती है। अगर हर स्वस्थ व्यक्ति नियमित रूप से रक्तदान करें, तो किसी की जान बचाना बेहद आसान हो सकता है।

याद रखें, रक्तदान एक पवित्र कार्य है। आप द्वारा दिया गया कुछ ही मिनटों का समय किसी के लिए पूरी जिंदगी बन सकता है। इसलिए अगली बार जब ब्लड डोनेशन कैंप दिखे, तो झिझकें नहीं और आगे बढ़कर "Life Saver" बनें।

रक्तदाता स्वस्थ जरूरी

रक्तदान हर वह व्यक्ति कर सकता है जो शारीरिक रूप से पूरी तरह स्वस्थ हो। 18 से 60 वर्ष के बीच की आयु हो और 50 किलो से ज्यादा वजन है। हीमोग्लोबिन का स्तर 12.5 ग्राम/डीएल या उससे अधिक हो। किसी भी तरह की गंभीर बीमारी (HIV, हेपेटाइटिस बी या सी आदि) न हो। पिछले 3 महीने में कोई बड़ा ऑपरेशन या ब्लड ट्रांसफ्यूजन न हुआ हो... तो रक्तदान कर सकते हैं।

रक्तदान की प्रक्रिया

1. हेल्थ चेकअप में ब्लड प्रेशर, हीमोग्लोबिन टेस्ट व सामान्य स्वास्थ्य जांच।
2. जांच में फिट पाए जाने के बाद दानकर्ता के एक हाथ की नस से स्टेराइल बैग में 350–450 ml रक्त लिया जाता है। यह पूरी प्रक्रिया करीब 10–15 मिनट में पूरी हो जाती है।
3. रक्तदान के तुरंत बाद जूस या पानी पीने की सलाह दी जाती है ताकि शरीर में एनर्जी बनी रहे। कुछ देर आराम करने के बाद व्यक्ति सामान्य कामकाज कर सकता है।
4. लिया गया रक्त पूरी तरह जांचने के बाद ही जरूरतमंद मरीज को दिया जाता है, जिससे सुरक्षित ट्रांसफ्यूजन सुनिश्चित हो सके।

रक्तदान के फायदे

- किसी जरूरतमंद को जीवनदान देना।
- नियमित ब्लड टेस्ट से स्वास्थ्य की जानकारी।
- हृदय और रक्त संचार प्रणाली को स्वस्थ बनाए रखना।
- आत्मिक संतुष्टि और सामाजिक सम्मान।

राजसमंद में रेडक्रॉस सोसायटी बनी तारणहार

भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी जिला शाखा राजसमंद द्वारा विगत कई वर्षों से रक्तदान जीवनदान के तहत समय पर पीड़ित रोगियों को रक्त उपलब्ध करवा कर सैकड़ों लोगों को जीवनदान दिया है, जो आज भी जारी है। इसका गठन 21 अप्रैल 1992 को हुआ। अध्यक्ष जिला कलक्टर पदेन है एवं उपाध्यक्ष सीएमएचओ हैं। 3 फरवरी 2023 को जिला

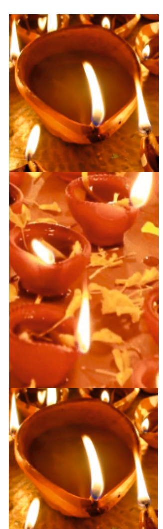

रेडक्रॉस सोसायटी के चुनाव के तहत कुलदीप शर्मा चेयरमैन है, जबकि अशोक डूंगरवाल कोषाध्यक्ष है। मैं भी बतौर मानद सचिव के सेवा कर रहा हूं। साथ ही कई सदस्यगण भी इस पुनीत कार्य में जुटे हैं। रक्तदान, देहदान, नेत्रदान, नशा मुक्ति, आपदा में भोजन प्रबंध, जरूरतमंद को कंबल, किचन किट, सफाई अभियान, गुमशुदा की तलाश आदि सेवा कार्य शामिल हैं।

आपातकालीन स्थिति में पीड़ित लोग जब भी रक्त की जरूरत पड़ने पर कॉल करते हैं, तो हर संभव सहायता की जाती है। यह मदद राजसमंद जिले के अलावा भी उदयपुर, जयपुर, अहमदाबाद भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, अजमेर, जोधपुर, कोटा के साथ देश के कई जगह पर रक्त की सेवाएं उपलब्ध करवा कर अब तक लगभग 1 लाख से अधिक पीड़ित रोगियों को जीवन बचाने में अहम भूमिका निभाई है। आज 10, 000 से अधिक नियमित रक्तदाता की बदोलत अल्प सूचना पर जरूरत मुताबिक सूची के माध्यम से आपातकालीन रक्त समूह ब्लड सेंटर पर उपलब्ध नहीं होने पर स्वैच्छिक रक्तदाता को प्रेरित कर पीड़ितों के लिए समय पर उपलब्ध करवाया जाता है। यह प्रक्रिया नियमित प्रतिदिन 24 घंटे अनिरुद्ध जारी रहती हैं।

रक्त : Blood Group

A, B, O, AB Rh factor positive & Negative (+ ve,-ve)
New group Bombay blood group(As limit society)
Healthy person 12:5gram%
वजन 45 किलो ग्राम से अधिक
उम्र आयु 18 वर्ष से 60 वर्ष
नो डिजीज TB, malaria, dengu, typhoid, kidney disease, Eemia, thalisimia, HIV, BP, sugar, majer surgery, over blooding, vomiting, skin disease Any Drugs abuse, thyroid, epilepsy, alkoholic person, etc BTC guidelines

रक्त की किसे जरूरत

सीवीयर एनीमीक, एक्सीडेंट गर्भवती महिला, सर्जरी, कैंसर, किडनी डिजीज, डायलिसिस, ब्लीडिंग एनीमीक, गर्भवती महिलाओं, थैलेसीमिया एचआईवी आदि रोगियों को जरूरत होती है। सर्वाधिक दुर्घटनाग्रस्त लोगों को इमरजेंसी में जरूरत रहती है।

ब्लड का विकल्प नहीं

यह सर्व विदित है कि दुनियां में ब्लड का कोई विकल्प नहीं है। रक्त किसी फैक्ट्री में नहीं बनता है, इसके लिए मानव शरीर एकमात्र रक्त का कारखाना है। पूरे विश्व में अधिकांश वैज्ञानिक रक्त के अवयव एवं रक्त के कंपोनेंट बनाने की खोज में लगे हुए हैं। फिर भी ईश्वर द्वारा प्रदत्त मानव रक्त ही मानव के लिए जीवन बचाने में उपयोगी सिद्ध हुआ है, जहां तक समझा जाता है कि रक्त के अवयव शरीर में एक ईश्वरी देन है एवं प्राकृतिक प्रक्रिया से बनता है, जो जीवन की जीवन रेखा के रूप में जाना जाता है। रक्त की अत्यधिक कमी से शरीर का कोई भी अंग कार्य करना बंद कर सकता है। यही वजह है कि पीड़ित को समय पर रक्त उपलब्ध करवाना आवश्यक है। पूरे देश में आज भी ज्यादातर लोगों में रक्तदान को लेकर कई भ्रांतियां है और अंधविश्वास है। इसी कारण लोग रक्तदान करने से हिचकते हैं, जबकि रक्तदान करना तो खुद के लिए फायदेमंद है।

ब्लड की उपलब्धता

रक्त लाइसेंसशुदा ब्लड सेंटर पर स्टोर किया जाता है। केन्द्र पर 5 से 6 मिनट में रक्तदान की प्रक्रिया है। हालांकि इसके लिए सात आठ जांचें करवाना जरूरी है। स्वस्थ व्यक्ति ही रक्तदान कर सकता है। रक्त की आयु मात्र 35 दिन है। फिर भी ब्लड सेपरेटर के माध्यम से कुछ अधिक दिन भी रख सकते हैं। अल्प रक्त समूह वाले ग्रुप आज भी एक गंभीर समस्या बनी हुई है।

प्रेरक कहानी

अश्विनी कंवर बनी पिता की बहादूर बेटी, पूरे राजसमंद के लिए है गौरव का पल

आज से ठीक दो साल पूर्व, मेरे जीवन के प्रथम कवि सम्मेलन में जब मै मंच पर महाराणा प्रताप की वीरगाथा को मेवाड़ी भाषा के गीत के रूप में पढ़ने को खड़ा हुआ तो प्रथम बार पढ़ने की घबराहट ओर मेरे उतावलेपन के कारण मै थोड़ा विस्मित हो गया।

उसी चलते सम्मेलन में एक व्यक्ति मेरे पास आए और बोले पंडित जी आप घबराइए मत आपने जो लिखा वो कल्पना से परे है, आपकी परफॉर्मेंस जरूर कमजोर रही क्योंकि शायद आप पहली बार पढ़ रहे है, इसलिए यह सब होता रहता है। ओर दूसरे दिन मेरी पंक्तियों को राजस्थान पत्रिका की हेड लाइन बनाकर आपने छपवाया।

उस छोटी सी मुलाकात में उन महान शख्सियत से मेरा परिचय हुआ, वे आदरणीय भाई साहब श्री बहादुरसिंह जी चुण्डावत गुरुजी है। आप पेशे से शिक्षक, पत्रकार और मेवाड़ी परंपरा के संरक्षण, संवर्धन के अनूठे सिपाही है।

आज यह लेख मैं इसलिए लिख रहा हूं कि कैसे हमारे संस्कार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होकर एक गौरव का विषय बन जाते हैं।

बहादुर सिंह जी चुंडावत के बारे में इतना पता है कि जो मुझे आदरणीय प्रमोद जी भाई साहब के गीत की पंक्तियां याद आ रही है 'जब कभी भी चर्चा होगी शौर्य धरा सम्मान की..., पहली पंक्ति गाथा होगी मेवाड़ी बलिदान की, उस मेवाड़ी सम्मान और बलिदान के लिए सदैव तत्पर रहने वाले बहादुर सिंह जी गुरुजी की पुत्री ने आज राजस्थान प्रशासनिक सेवा में 316 वी रैंक और टीएसपी में 4 थी, जिसने रैंक प्राप्त की, वे जिले से प्रशासनिक सेवा में आई हैं।

इस बात की मुझे बहुत ज्यादा खुशी हुई अश्विनी कंवर चुंडावत पर संपूर्ण राजसमंद जिले को गर्व है। आपकी अथक मेहनत ने आपको इस काबिल बनाया कि आपने अपने घर, गांव, तहसील और राजसमंद जिले का नाम रोशन किया है। आपके पिता जी ने जो नेक कार्य कर समाज में संदेश दिया, उन्हीं भले कार्यों की वजह से सैकड़ों, हजारों मित्रों और समाजजनों का आशीर्वाद आपको प्राप्त हुआ।

प्रभु एकलिंगनाथ का जो प्रसाद आपको प्राप्त हुआ है, वो निरंतर देश दुनिया में देदीप्यमान रहे और आप निरंतर जन सेवा में मेवाड़ का नाम रोशन करती रहे।

जय मेवाड़

गोपाल शर्मा
साहित्यकार
केलवाड़ा, कुंभलगढ़
मो. 90799-29639

मेरे गांव के फेमस हलवाई

जलचक्का, कांकरोली
मो. 98284-75288

द्वारकाधीश की पावन नगरी में अनेकानेक विधाओं में ख्याती पाए स्व. लोगों के बारे में आप पिछले कई अंको में पढते चले आ रहे हैं। रोशनी के त्यौहार दिपावली के इस अंक में दिवाली की धन लक्ष्मी के साथ-साथ मिठाईयों वाला त्यौहार भी माना जाता है। अतः इस अंक में अबकी बार हम मेरे गांव कांकरोली के बहुत ही मशहुर मिठाई बनाने वाले स्व. हलवाईयों के बारे में बताने जा रहे हैं।

1. रामजी कलाकंद व सेव वाले

विक्रम संवत 1979 को राजनगर गांव से यहां कांकरोली आकर बसे स्व. श्री भुरादास जी हलवाई (वैष्णव) के घर माताश्री स्व. कंकु बाई की कोख से रामदास बैरागी (वैष्णव) का जन्म हुआ। पिता श्री स्व. भुरादास जी भी हलवाई का काम करते थे, तो बचपन से ही स्व.रामदास जी भी हलवाई के काम में लग गये। औपचारिक शिक्षा नाममात्र की प्राप्त कर उन्होने अपना सारा ध्यान रेती मोहल्ला की ढाल पर दुकान लगाकर अपना हलवाई का कार्य प्रारम्भ कर दिया। उनका बनाया कलाकन्द (मावा) कुछ ही दिनों में पूरे गांव में मशहुर हो गया। साथ ही आसपास के गांवो में भी कलाकन्द पसन्द किया

जाने लगा। आज से लगभग 60-70 वर्ष पहले आसपास के गांवो मुख्यतः बागडोला से शुद्ध दुध मंगवाकर अपनी छोटी सी धुंए से काली दुकान में जब वे कलाकन्द बनाकर तीन आना छठान में बेचते थे। तो खाने वालो को मजा आ जाता था। कुछ दिनों बाद उन्होने नमकीन बनाना भी प्रारम्भ कर दिया और उनकी बनाई सेव रामा की सेव से मशहुर हो गई। क्या समय था, मैं भी जब पांचवी-छठी में पढता था, तो उनकी दुकान से आधा आना यानि 3 नये पैसे की सेव लेता तो बड के पत्ते से बने दोने में वे इतनी सेव दे देते थे कि मेरे हापेन्ट की दोनों जेबें पुरी भर जाया करती थी। मैं दिनभर उसे खाता रहता था। वे सीधे- साधे साधारण रहन सहन और गरीबी में जीवन बिताने वाले अपना जीवन गुजार कर 2 सितम्बर 2011 को अपने पुत्र श्री रोशन लाल वैष्णव व पुत्री स्व. प्रेम बाई और अपने कई प्रेमी करीबियों व अपने कलाकन्द का स्वाद और नमकीन की यादे छोड़ स्वर्ग सिधार गए उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि।

02. श्री मोहन लाल जी व्यास (मोहन दा हलवाई)

श्री मोहन लाल जी व्यास मुलतः कांकरोली के निवासी थे। आपके पिताश्री स्व. घासीराम जी व्यास के घर में दिनांक 6 अप्रेल 1912 ईष्वी में माता श्री श्रीमती प्यारी बाई की कोख से आपका जन्म हुआ। अपना बचपन माता-पिता की छत्र-छाया में गुजार जब वे कुछ सयाने हुए तो उन्होने रसोईये का कार्य प्रारम्भ किया। वे अपने जमाने के प्रसिद्ध रसोईये माने जाते थे। उनकी देखरेख में कई बडे -बडे भोज क आयोजन हुआ करता था। उनकी बनी मिठाई बडी स्वादिष्ट हुआ करती थी। अतः आसपास के कई गांवो में भी वे मशहुर थे। कांकरोली के आसपास कई गांवो में भी कई विवाह, मृत्युभोज व बड़े -बड़े सम्मेलनों में खाना

बनाने का कार्य किया करते थे। उस जमाने में मुख्यतः लापसी, पुडी व दाल का प्रचलन बहुत था। उन्होंने नुक्ति पुडी, दाल व मोनथाल में महारत हासिल कर खुब नाम कमाया। सन् 1977 में उन्होने जे.के.टायर के कैन्टीन का कार्य भी किया। सन् 1998 में जे.के.ग्राम में आयोजित बहुत ही बडे आयोजन 13000 व्यक्तियों के भोजन का कार्य भी उन्होने सफलता पूर्वक किया। मोहन लाल जी व्यास का व्यक्तित्व साफ सुथरा था। हष्ठ- पुष्ठ अच्छे कद गाठी के वे धनी थे। उन्होने कांकरोली बडे दरवाजे के पास अपनी मिठाईयों की दुकान खोल रखी थी। जिसे आज भी उनके पुत्र श्री मनोहर लाल जी व्यास बखुबी चला रहे हैं। आज भी उस दुकान को मोहन दा की दुकान से जाना जाता है। 29 अप्रेल 2004 को आपने अपने जीवन के 92 वर्ष पुर्ण कर अपने शरीर को त्याग दिया। मगर आज भी लोग मोहन दा की बनी मिठाईयों को याद कर उन्हे याद करते हैं उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि।

03. स्व. भंवरलाल जी व्यास (भंवर दा हलवाई)

स्व. गोपीलाल जी व्यास के घर कांकरोली में स्व. श्रीमती पन्ना बाई को दिनांक 19 फरवरी 1933 को एक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। जिसका नाम बडे प्यार से भंवर लाल व्यास रखा गया। वे बचपन से ही हष्ठ- पुष्ठ और

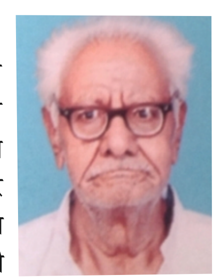

चंचल स्वभाव के व्यक्ति थे। जब वे कुछ बडे हुए तो उन्होने भी हलवाई का धंधा प्रारम्भ कर दिया। वे भी आसपास के कई गांवों व अपने गांव कांकरोली में शादी ब्याह व अनेक प्रकार के आयोजनों में खाना बनाया करते थे। मगर उन्हें प्रसिद्धि मिली गुलाब जामुन में। उनके बनाये

गुलाब जामुन बडे चाव से खाये जाते थे और लोग उन गुलाबजामुन को पसन्द भी किया करते थे। मुझे भी अच्छी तरह याद है उस जमाने में स्कूलों में वार्षिकोत्सव में सभी बालकों का सामुहिक भोज हुआ करता था। मैं जब बालकृष्ण विद्यालय में पढता था तब वार्षिकोत्सव के ऐसे ही सामुहिक भोज में भंवर दा ने दाल-पुडी के साथ गुलाब जामुन बनाये थे। वाह.... क्या मजा था। इतने स्वादिष्ट और मुलायम गुलाब जामुन आज भी याद आते हैं। मेरे मित्र श्री पुनम चन्द जिसे हम पुनिया कहकर पुकारा करते थे। उनके साथ भोजन पर बैठे तो ये क्या? पुनिया एक के बाद एक गुलाब जामुन गटके जा रहा था उसके साथ बैठे सम्पत सोनी उसके खाये गुलाब जामुनों को गिनता जा रहा था। पूनिया ने 12 गुलाब जामुन खाये जो उस समय चर्चा का विषय बन गया था। ऐसे थे भंवर दा स्वादिष्ट गुलाब जामुन बनाने वाले इसी तरह तरह-तरह की मिठाईया मेरे गांव कांकरोली को खिलाते-खिलाते 5 दिसम्बर 2016 को वे ईश्वर को प्यारे हो गए। अपने भरे-पुरे परिवार को छोड़ स्वर्ग सिधार गये। उन्हे मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

4. स्व. श्रीमान डूंगाराम जी साहु (डूंगा बा समोसे वाले)

पडौसी गांव राजनगर में स्व. धन्ना लाल जी साहु (तेली) के एक साधारण परिवार में स्व. डुंगाराम जी का जन्म हुआ। और जब वे माता पिता की देखरेख में थोडा बहुत पढ लिखकर कुछ बडे हुए तो उनका विवाह हो गया। घर की जिम्मेदारियां उन पर आ गई। राजनगर में कुछ बात बनी नहीं, तो वे राजनगर से कांकरोली जलचक्की पर स्व. श्री नाथुलाल जी वैष्णव के खेतों पर बनी दुकानों पर आकर रहने लगे। और लारी में सेव नमकीन का कार्य प्रारम्भ कर दिया। उनकी नमकीन लोगों को पसन्द आ गई और उनका धंधा चल निकला। वे जो बारिक व मासेदार नमकीन बनाते थे वो बहुत ही स्वादिष्ट और अच्छी होती थी। लोग उनकी नमकीन को हाथोंहाथ खरीद लिया करते थे। धीरे-धीरे उनका धंधा बहुत अच्छा चल निकला। तो आपने लारी चलाना छोड स्व. गोपीलाल जी सुथार की दुकाने जो जलचक्की पर ही है। किराये लेकर एक छोटी-मोटी चाय और नमकीन की दुकान खोलकर व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया। वे रोज मेदे की गांठिया और ताजा नमकीन बनाया करते थे। नमकीन तो पहले से ही लोगों में मशहुर थी पर मेदे की गांठिया और चाय के साथ का लुत्फ और रंग ले आया। डुंगा बा की चाय व गांठिया भी मशहुर हो गए। आपने व्यापार को बढता देख समोसे बनाने का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया। 10 नये पैसे से 1 समोसा उनका ब्राण्ड बन गया। धीरे-धीरे डुंगा बा के समोसे की महक चारों और फैल गई और सुबह से शाम तक समोसे ही समोसे बिकने लग गए। समोसे भी जायकेदार गुणवत्ता में उत्तम और उतने ही सस्ते की

दुकान पर खरीददारों की भीड उमडने लगी। पूरे गांव में डुंगा बा के समोसे की धूम मच गई। समय के साथ वे स्वर्ग सिधार गए पर आज भी उनके लड़के और पौते उनकी बनाई गुणवत्ता और सस्ते डुंगा बा के समोसे के नाम से अपना व्यवसाय चला रहे हैं। आज भी उनकी दुकान पर उतनी ही भीड़ और लम्बी-लम्बी कतारे डुंगा बा के समोसे खरीदने को लगी रहती है। और कतार लगे क्यों नहीं ..? डुंगा बा के समोसे की गुणवत्ता और सस्तापन लोगों को खींच लाता है। जलचक्की की डुंगा बा की समोसे की दुकान पर आज वे इस दुनिया में नहीं है। पर उनकी मेहनत ईमानदारी और गुणवत्ता ने कभी ऐसा नहीं लगने दिया कि डुंगा बा नहीं है। आज भी लोग यही कहते हैं कि समोसा हो तो डुंगा बा जैसा। उन्हें मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

युग धर्म

तुम दीप जलाओ
हम दीपक का मान रखेंगे
तुम स्वप्न सजाओ
हम सपनों का ध्यान रखेंगे

तुम विरल हवाओं संग
ललित संवाद बनाओ
हम संवादों के फलित
मान का ध्यान रखेंगे

तुम दीप ज्योति की
सतत् अहर्निश लड़ियां साधो
हम अंधियारों से
लड़ जाने की आन रखेंगे

यह युग प्रकाश का मंत्र
उच्चरित करता जाये
हम प्रत्यंचा पर सजग
उल्लसित बान रखेंगे।

डॉ. राकेश तैलंग
शिक्षाविद् व साहित्यकार
द्वारकाधीश मंदिर मार्ग, कांकरोली

आज उनकी बात क्यों ?

आज उनकी बात क्यों ?
दीप मालाऐं सजाओ
जमके दिवाली मनाओ
दीप जिन दिल के बुझे हैं
आज उनकी बात क्यों ?

साज मस्ती का बजाओ
मिठी धून में गुनगुनाओ
तार टूटे जिनके मन के
आज उनकी बात क्यों ?

रोशनी को कैद करके
आज रखलो अपने घर में
खो चुके जो रोशनी को
आज उनकी बात क्यों ?

आज इनसे और उनसे
बातें अपने की करो
हम हैं क्या और वे हैं क्या
आज उनकी बात क्यों ?

अफजल खां 'अफजल'
वरिष्ठ साहित्यकार, कांकरोली
मो. 9828475288

तुझे पाने को क्या ना किया नोबेल

विनोद कुमार 'विक्की'
खगड़िया बिहार, मो. 7765954969

स्वघोषित युद्ध विराम पुरुष का हक मार कर मारिया ने इस वर्ष का नोबेल शांति पुरस्कार प्राप्त कर लिया। नार्वेजियन नोबेल समिति द्वारा पूंजीवादी गतिविधियों की होड़ में लोलुपता पर लोकतांत्रिक गतिविधियों की सक्रियता को प्राथमिकता दिए जाने के निर्णय ने युद्ध विराम पुरुष की बेचैनी बढ़ा दी है। तकलीफ़ ऐसी कि ना दिखा सके और ना छुपा सके। स्वयंवर समारोह से बिना दुल्हन के लौटने वाले सम्राट की पीड़ा,तन, मन, धन, यौवन समर्पित करने के बावजूद चुनाव में पार्टी का टिकट नहीं मिलने वाले प्रत्याशी की वेदना भी उनकी तकलीफ़ के सामने फीकी लग रही है। जिस प्रकार जोमैटो, स्विगी अथवा ऑनलाइन मार्केटिंग करने पर प्राप्त लाखों रूपए के इनामी कूपन को स्क्रैच करने पर उपभोक्ताओं को 'बेटर लक नेक्स्ट टाइम' लिखा हुआ ज्ञान प्राप्त होता है। कमोबेश उसी तरह विश्व शांति पुरुष स्वयं को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं।

युद्ध विराम पुरुष को महमूद की तरह 'मैं तेरे प्यार में क्या-क्या ना बना दिलबर... की तर्ज पर शांति नोबल के लिए क्या-क्या नहीं करना पड़ा। कभी आतंकी राष्ट्रों से मित्रता, कभी शांति प्रिय राष्ट्रों से शत्रुता तो कभी कौआ काटने की जोखिम के बावजूद धारा प्रवाह झूठ पर झूठ बोलना। वेनेजुएला की मारिया के खाते में शांति का नोबेल को जाते देख युद्ध विराम पुरुष मन ही मन आमिर खान बन 'तू प्यार है किसी और का, तुझे चाहता कोई और है... गुनगुनाते फिर रहे होंगे। भ्रांति की आड़ में शांति पुरस्कार की जद्दोजेहद कर रहे युद्ध विराम पुरुष को काफी पिज्जा बेलना पड़ गया। नोबेल की माया के वशीभूत युद्ध विराम पुरुष ने टैरिफ ओवरकोट पर अमन और शांति का चोला धारण कर लिया था। ऐसा लग रहा था मानो विश्व शांति पुरुष के पार्थिव शरीर में मोहनदास करमचंद गांधी एवं मार्टिन लूथर किंग की संयुक्त आत्मा प्रवेश कर चुकी है और शांति नोबल प्राप्त करने को ललकार रही है। बकायदा उन्होंने शांति पुरुष बनने का क्रैश कोर्स भी किया। जिस कारण लंबी नाक वाले युद्ध विराम पुरुष वैश्विक स्तर पर दो देशों के आपसी विवाद में अपनी नाक घुसेड़ दिया करते थे।

स्वघोषित अंतरराष्ट्रीय शांति पुरुष सभी अंतरराष्ट्रीय युद्धों में स्वयं को युद्ध विराम पुरुष मान कर आत्ममुग्ध और आह्लादित हुआ करते थे। शांति नोबल पुरस्कार पाने को लहालोट थे। विश्व पटल पर यद्ध सामग्री बेचने वाले शांति की बात करते देखे गए। गौरतलब है कि शांति पुरुष नोबेल के चक्कर में ग्लोबल से बिलो लेवल भी होना पड़ा। नोबेल के मोहपाश में इनके बावलापन के सामने छपास मोह के वशीभूत रचनाओं के प्रकाशन की लालसा रखने वाले लेखक, तालियों के ग्लूकोज से ऊर्जा प्राप्ति हेतु कविता पाठ करने को बेताब कवि अथवा लाईक, कमेंट और शेयर की उत्कंठा वाले रील इंफ्लुएंसर का फूहड़पन भी उतावलापन की गुणवत्ता को चुनौती देने से पहले एक सौ इक्यावन बार सोचें। महाशय ने अपनी नाक ऊंची रखने के लिए मित्रों के कान काटने से भी गुरेज नहीं किया। दुःखद बात यह है कि नोबेल की अभिलाषा में महाशय जी गजनी के आमिर खान वाली शॉर्ट टर्म मेमोरी लॉस महारोग से ग्रसित भी हो गए। अपने गोरे चमड़े की जुबान से पिछली रात किस देश के बारे में क्या बका है अगली सुबह भूल जाते हैं। शांति पुरुष कब किस देश की तारीफ़ कर दें और किस देश पर टैरिफ लगा दें "यह देवो न जानाति कुतो मनुष्यः" अर्थात समझ पाना काफी मुश्किल है। आतंकी राष्ट्रों के प्रति भाईगिरी एवं प्रतिस्पर्धी राष्ट्रों के प्रति दादागिरी का भाव दिल में रखते हुए भाषा और भाषण में इज़हार भी कर दिया करते हैं।

सच पूछिए तो नोबेल मेनिया से ग्रसित शांति पुरुष की हृदय वेदना का इलाज एलौपैथी, होम्योपैथी, नेचुरोपैथी में भी नहीं है। बहरहाल 10 अक्टुबर को मारिया कोरीना के हाथों में शांति नोबल पुरस्कार देखकर "मेरी किस्मत में तू नहीं नोबेल, क्यों तेरा इंतज़ार करता हूं...'' बुदबुदाने वाले विश्व शांति पुरुष के प्रति टैरिफोपैथी पीड़ाहारी सहित हमारी ढ़ेर सारी सिम्पैथी है।

शुभ दीपावली
अपील : जन्म- मृत्यु व विवाह का पंजीयन अवश्य करवाएं।
बिजली, पानी बचाएं व ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाए।
कुड़ा- करकट कचरा पात्र में डालें व गांव को स्वच्छ बनाएं
सुमन साहू
प्रशासक- ग्राम पंचायत
केलवा, जिला- राजसमंद

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं
अपील :
जन्म- मृत्यु व विवाह का पंजीयन अवश्य करवाएं।
बिजली, पानी बचाएं व ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाए।
कुड़ा- करकट कचरा पात्र में डालें व गांव को स्वच्छ बनाएं
सुमन कुंवर
प्रशासक- ग्राम पंचायत लाम्बोड़ी, प.स. कुंभलगढ़, राजसमंद

शुभ दीपावली
मीरा सालवी
प्रशासक
शंभूलाल व्यास
ग्राम विकास अधिकारी
अपील- पंचायत को स्वच्छ बनाएं रखने में सहयोग करें।
पेड़ लगाएं- पर्यावरण बचाएं। सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करें।
ग्राम पंचायत कान्हादेव का गुड़ा, जिला- राजसमंद

Happy Diwali
देवेन्द्र कुमार टांक (रेलमगरा वाले)
मां धनोप वाइन
सभी ब्रांड की शराब उपलब्ध।
Mo.9982899099 वाइन शॉप : गारियावास, राजसमंद व नाथूवास, नाथद्वारा
नोट : शादी, जन्मदिन पार्टी सहित सभी इवेंट के लिए उचित दर पर सभी तरह की ब्रांड की शराब उपलब्ध।

माँ लक्ष्मी का आशीर्वाद आप पर बना रहे,
घर में सुख-समृद्धि और शांति सदा बसे।
देवीलाल पालीवाल
समाजसेवी- रिछेड़, कुंभलगढ़, जिला- राजसमंद

Is Gen Alpha
Growing Up Online?

Manisha Lashkari
Teacher's Trainer & Parenting Coach, Jodhpur

Hello Readers.

I am back with a series of articles for parents but before you jump to read about Gen-Alpha I want you to know the different generations' names- The Silent Generation (1928-1945) 80-97 years, Baby Boomers (1946-1964)61-79 years, Generation X (1965-1980) 45-60 years, Millennial (Gen-Y)(1981-1996) 29-44years, Gen-Z (1997-2012) 13-28 years, Gen Alpha (2013-2028) 0-12 years. Arav, the fortunate child born in a pretty rich family, had working professional parents and all the facilities enough for today's time to spend a good life. When Arav became 3 years he already had his own tab and access to his mother's mobile. Arav is fortunate to be born in a technological era that the entire world was in his hands, available on one click.

He had access to everything required or not required. He was growing up in a world filled with screens, video games, YouTube and social media platforms from the very moment he opened his eyes. He saw screens before he could see the beauty of nature and thus met the reel world before finding the real one.

Unfortunately Gen-Alpha is born in such an era and parents could not evolve for the parenting of 21st century children. More than affection it was mother's greed to keep him engaged during her work from home hours therefore she started giving him mobile at the age of 18 months and slowly

Arav started shifting from the colorful toys, cars and story books to the screen which became 4-5 hours when he turned six.

Nothing to say when a child is spending up to four hours a day on screen he will jump over everything be it the video platforms, moving from one animated series to another, mimicking viral videos, scrolling reels and playing games. And so Arav's parents noticed changes but they neglected those considering him a child. However after a few days Arav's school teacher raised concerns about his declining focus, concentration and performance and shockingly the use of inappropriate sexualized language with peer groups. The counselor pointed to the over exposure to content and over stimulation as major contributor, parents realized the damage and their own ignorance.

Arav was simply repeating the sentence and gestures in his friend's group, thinking they were funny or it was just to

impress others that he knew something which others didn't. While peers joined him out of curiosity and for sure without realizing the weight of the words they exchanged. Arav and his friends didn't harm; they were simply unaware of what they were doing, and what did that mean. They didn't know when the lines between fun and inappropriate behavior were blurred. But the question is-

Didn't we know? That digital platforms often auto-play related videos. Using mother's mobile itself comes with a great risk. Many parents believe kids knows nothing while they are in the process of knowing. That children do not learn what we say but what they see.

Children are fast to absorb language, expressions, gestures etc. Children enjoy earning attention from friends. Own life experience plays very important role in shaping the future life. They are too young to differentiate between the fun and harmful expressions.

What parents can do?

•Ensure children get access to age appropriate content for a limited time. Review and discuss all the accessed content. Set the boundaries. Stop over exposure to anything without monitoring. Use limited mobile screen in child's presence. Encourage offline activities like storytelling, sports, drawing, outing etc. No screen at dining table nor in the bedroom. Understand that mobiles are not the digital babysitters.

While access to technology brings learning opportunities, it also exposes young minds to content they are neither emotionally nor cognitively ready to process. The constant content intake affects attention span, eating habits, sleep pattern, social life, and even emotional stability. One of the worrying trends today is how overexposure to inappropriate content can affect children's behavior, language, thought process and their overall being. Technology is itself not the enemy but only the right usages shape better outcomes.

Arav's story is not about blaming but about awareness. Parents can't parent children today the same way their parents did, also without knowing how and what is the need of the hour. Gen-Alpha has immense potential to learn, connect and create like never before but this endless content can rob them of focus, imagination and empathy. Their innocence is precious, let's save it. Let's equip them not just devices but the wisdom.

व्यंग्य

दिवाली और खुजली बाबू

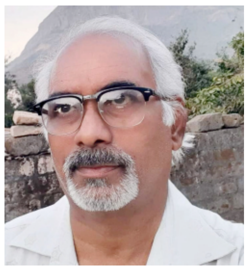

सुनील जैन 'राही'
व्यंग्यकार, नई दिल्ली
मो. 98109-60285

पनवाड़ी ने बड़े आदर से कहा-खुजली बाबू का पान है? चूना कितना लगवाइयेगा? कत्था रहेगा या बिना चूने-कत्थे के पान बनेगा? कितने बीड़ा पान लगाएं? पान घर भी भिजवाना है? केवल आफिस के लिए पान बना दें? वर्मा जी भी पान खाएगे? या अकेले पान चबायेंगे? अकेले पान खाने के आदि नहीं हैं। वे बिना खाए स्टाफ को देखे ऐसा कभी हुआ नहीं। खुजली बाबू नये-नये आफिस में आए थे। उल्टा हाथ खुजाते हुए बोले-आज लक्ष्मीदेवी प्रसन्न होने वाली है। खुजली जो हो रही है। वह पहला दिन था जब उन्हें रिश्वत मैया ने प्रसन्न होकर दर्शन दिए। रिश्वत लेते समय आत्मग्लानि हुई, लेकिन वर्मा जी ने कहा अफसोस की बात नहीं है सब मिलकर खाते हैं। कुछ खर्च करो बाकी घर पर। बात जम गई। ग्लानि प्रोत्साहन में बदल गई। खुजली बाबू अगर बाबू नहीं होते तो वैज्ञानिक जरूर होते। ऐसे वैज्ञानिक बनते जो गोबर से तेल निकाल लेते। खुजली बाबू को याद नहीं कि खुजली बाबू नाम कैसे पड़ा? उनके एक दोस्त ने बताया-लोग उन्हें खुजली बाबू के नाम से पुकारने लगे हैं। खुजली बाबू की सबसे महत्वपूर्ण सीट थी। सभी गाड़ियां (फाइल) उसी स्टेशन से होकर गुजरती थी। उन्हें मालूम था किस गाड़ी को आउटर पर कितनी देर खड़ी करना है और किस गाड़ी को लूप लाइन पर डालकर सो जाना है। कुछ गाड़ियां ऐसी भी थी जो वर्षों से सिग्नल के इंतजार में खड़ी थीं। जो एक्सप्रेस गाड़ी होती उनका किराया अधिक होता। लगेज का अलग से अतिभार लग जाता। जो गाड़ी प्लेट फार्म नम्बर एक पर लगती, उसी के ड्राइवर का काम होता। यह काम आसानी आफिस में हो जाता, लेकिन सीसी टीवी और मोबाइल फोन की सक्रियता ने इस कार्य को जटिल से भी जटिलतर बना दिया। मैंने कहा था न कि अगर खुजली बाबू अगर यहां न होते तो वैज्ञानिक होते? चाय की टपरी, कितनी चम्मच चीनी ये चीजें पुरानी हो गईं। जब आवक बढ़ी तो उसका माकूल ईलाज जरूरी था। पुराने दोस्त के लड़के को पान की दूकान ऑफिस के बाहर खुलवा दी। लड़का सरकारी बाबू से कम नहीं बना। ठीक दस बजे दुकान खोलना और शाम छह बजे बंद कर देना। पान कौन खाता है आजकल? कितने पान बिकते हैं? जब तक ऑफिस खुला रहता पान की बिक्री होती रहती। आफिस बंद, बिक्री बंद और फिर दूकान बंद।

आफिस की दिवाली पान वाले की मेहरबानी पर चलती थी। उसके जितने पान बिकते ऑफिस की उतनी जेब गरम होती। यह जरूरी नहीं कि ऑफिस में पुराने घिसेपिटे ठेकेदार ही काम करवाने आएं। कुछ नए भी हाथ आजमाने चले आते हैं। बस ऐसे ही एक दिन एक सज्जन खुजली बाबू की कुर्सी के सामने खड़े थे। खुजली बाबू ने सोने की तरह तौला, कितने कैरेट का है? कहीं नकली (इंसपेक्टर) तो नहीं है? फिर समस्या पूछी और इलाज भी बता दिया। सामने जो पान वाला बैठा है उसे हमारा पान बनाने के लिए कह दो। तुम्हारा काम हो जाएगा। फिर पान वाले ने खुजली बाबू से ज्यादा इन्क्वारी कर ली। क्या काम है? कितने दिन में होगा? कितने मजबूर (मजदूर) होंगे? माल का रेशो (अनुपात) क्या रहेगा? डील कैसे होगी, नकद या पेटीएम से? नक़द में छूट मिलेगी और पेटीएम पर जीएसटी लगेगा। होम डिलीवरी पर कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लगेगा। डिलेवरी किसी अन्य स्थान पर देने से 10 प्रतिशत जोखिम टैक्स अलग से होगा। चूने की मात्रा, राशि? कत्था यानी साथ में गिफ्ट, बिना चूने-कत्थे का पान यानी मुफ्तखोर है, इसकी गाड़ी लूप लाइन पर खड़ी रहेगी। कितने बीड़ा यानी किस्त कितनी होंगी? पान घर भी भिजवाना है यानी बाबूइन के लिए गहना/साड़ी आदि, केवल आफिस के लिए पान यानी चाय-पानी का खर्चा। वर्मा जी भी पान खाएंगे यानी डिनर की पूरी व्यवस्था। अकेले पान चबाना यानी केवल खुजली बाबू का इंतजाम करना। वैसे अकेले पान खाने में जोखिम अधिक है। कुछ एक्सप्रेस गाड़ियों को दिवाली तक के लिए लूप लाइन पर खड़ा कर दिया जाता, जिससे दिवाली सबकी अच्छी मने। कभी-कभार राजधानी गुजर जाती यानी वह किसी मंत्री की सिफारिश से दनदनाती स्टेशन छोड़कर चली जाती। राजधानी को केवल हरी झंडी दिखाने की जिम्मेदारी रहती। आज खुजली बाबू के रिटायरमेंट को एक महिना बचा है। साहब के आदेश से उनके बगल की कुर्सी पर नए खुजली बाबू टेनिंग पा रहे हैं। खुजली बाबू के रहने से महकमा महकता है। न कभी आफिस बंद होगा और न कभी खुजली बाबू की सीट खाली होगी।

बस त्यौहार को तुम त्यौहार रहने दो

अपने पांडित्य का बखान रहने दो,
कुछ प्रेम प्यार का वितान रहने दो,
अलसाई संस्कृति में जान रहने दो,
बस त्यौहार को तुम त्यौहार रहने दो।

भाग दौड़ की जिंदगी में प्राण रहने दो
अपनी विद्वता की खींचतान रहने दो,
नई पीढ़ी में सभ्यता का मान रहने दो,
बस त्यौहार को तुम त्यौहार रहने दो।

आस्था, श्रद्धा,उपासना,दान रहने दो,
रिश्तों में थोड़ा आदान-प्रदान रहने दो,
भद्रा,प्रदोष काल ये भ्रमजाल रहने दो,
बस त्यौहार को तुम त्यौहार रहने दो।

त्यौहार आने से पहले आ जाते हो,
जोड़-तोड़ कर शुभ मुहूर्त बताते हो,
सोशल मीडिया पर तुम छा जाते हो,
अच्छे मुहूर्त का गुणा-भाग रहने दो।

ज्योतिषीय शास्त्रार्थ ज्ञानियों का मेल है,
'राम जी' मीडिया का उपजाया खेल है,
युवाओं में संस्कृति का सम्मान रहने दो,
बस त्यौहार को तुम त्यौहार रहने दो।

राम गोपाल आचार्य
शिक्षक व साहित्यकार
मो. 9929215040

दीपोत्सव स्पेशल

दीपावली त्यौहार की सार्थकता ?

श्रीमती प्रेम कुमावत
अध्यापिका व लेखिका
भाणा, कांकरोली, राजसमंद

दीपावली भारत वर्ष का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है जो कि सम्पूर्ण भारत के हिंदू धर्म में हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस पर्व के आगमन में घर-आँगन व कोने-कोने की साफ-सफाई व रंग-रोगन किया जाता है। लक्ष्मी जी के स्वागत में व प्रभु श्री राम के सकुशल वनवास से लौटने की खुशी को जाहिर करते हुए उनकी याद में घरों को प्रकाशमय दीपों की अवली से सुसज्जित किया जाता है। ये तम मिटाकर जीवन में उजाला भरने की प्रक्रिया सनातन-धर्म से चली आ रही हैं जो कि निरंतर अग्रसित है। बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक मानते हुए छोटे-बड़े सभी महानुभव नव वस्त्र धारण कर मीठी मनुहार से एक-दूसरे के घर मिठाइयों से मीठा मुँह करवाते हैं। वहीं बच्चों के दिलो-दिमाग में तो पठाखों, फूलझरियों, नववस्त्र व विभिन्न मिठाइयों का स्वाद जमा होता है। उन्हें प्रतिस्पर्धा में अपने शौक पूर्ण करने की चाहत रहती है कि किसने कितने अच्छे व महेंगें कपड़े पहने है या कितने ज्यादा रुपयों के पठाखे किसके पास है। वहीं किसके घर ज्यादा मिठाईयाँ उपलबद्ध है। सभी इस होड़ाहोड़ की परिपाटी पर सरपट दौड़ते जा रहें हैं और इससे ज्यादा आज के बच्चों को कोई जानकारी भी नहीं होती कि असल में दीपावली का अर्थ होता क्या है ?

यह पर्व केवल दीपक जलाने तक सीमित नहीं है। इसका गहरा आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक महत्व है। नकारात्मकता पर सकारात्मक्ता का प्रभाव है, जिसमें आत्मिक शुद्धि, आंतरिक शांति, काम, क्रोध, लोभ के विनाश का संदेश है। सिर्फ शारीरिक रूप से आँखों की सुखद अनुभूति व बाह्य चमक-दमक की रौशनी में नहाने से जीवन प्रकाशमय बना पाना मुश्किल है। जीवन ज्योति जागृत करने हेतु सिर्फ घरों की साफ-सफाई ही नहीं बल्कि मन के मैल मिटाकर हृदय के कोने-कोने को सुविचारो से प्रयुक्त दीपक जलाकर नव ज्योति से जीवन प्रकाशमय बनाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। सभी के घरों में मिठाई बाँट सको ये जरूरी नहीं पर अपनों से जरा मीठी जुबाँ से प्यार और परवाह के दो बोल जरूर कहें। उन्हें दीवाली की शुभकामनाएँ अवश्य प्रदान करें। ऐसा न हो कि आप भर-भर कर मिठाइयों का आनंद लेते रहें और आपका भाई या पड़ोसी कहीं भूखा ही न सो जाए।

श्री राम के वापसी की खुशी को यादगार बनाने के साथ पिता दशरथ की आज्ञा का पालन व माता केकैई की खुशियों का मान तथा भाई का भाई के प्रति प्रेम व कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए श्री राम जी का अपने छोटे भाई भरत जी के प्रति अथाह प्रेम ही तो था जिन्होंने अपने सारे अधिकार अपने छोटे भाई के लिए त्याग कर वन को गमन कर गए। भरत जी द्वारा अपने बड़े भाई श्री राम जी के अधिकारों की रक्षा करते हुए उनकी चरण पादुकाओं कों आदर्श मान कर उनकी वापसी तक उनके पदचिन्हों पर चलते हुए अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते रहे। लक्ष्मण जी ने अपने नव वैवाहिक-जीवन के भौतिक सुख-सुविधाओं से मुख मोड़ अपने भाई की सेवा में अपना अमूल्य जीवन अर्पित करते रहे। इसी सीख व समझाईस की आज सख्त जरूरत महसूस की जा रही है तो दूसरी ओर एक बहन का दूसरी बहन के कुशल जीवन के खातिर उर्मिला की पति वियोग में रातों की नींद खो गई और अपने प्रणय में अश्रुपूरित हो द्वार पर प्रतिक्षा में खड़ी रही। दीवाली के चकाचौंद भरे बाह्य आवरण के पीछे निहित नीति परक संदेशों को दृष्टिगत कर आज की नजरों के समक्ष प्रस्तुत करना अति आवश्यक हो गया है। क्योंकि आज मानव इतना स्वार्थी हो गया कि उसे अपनी खुशियों के आगे किसी ओर का भान ही नहीं रहता, बस अपने आप में जिए जा रहा है।

;g ioZ प्रेम, त्याग व समर्पण का त्योहार है जो हमें मानव-जीवन में एक दूसरे की परवाह करना सिखाता है तथा पारिवारिक सामंजस्य बनाए रखने की प्रेरणा प्रदान करता है। साथ ही एक-दूसरे के सुख-दुःख में सहयोग की भावना प्रकट करता है। अतः दीपावली जीवन कौशलों से परिपूर्ण एक महत्वपूर्ण त्योहार है जो कि मनुष्य के कुशल जीवन की नींव रखने व उसे मजबूत बनाने में सहयोगी साबित होता है। दीपावली पर्व का महत्व समझाने हेतु उक्त पहलुओं पर प्रकाश डालने की अति आवश्यकता महसूस की जा रही है जो कि भावी पीढी के जीवन यापन में सहयोगी सिद्ध हो सकती है। साफ-सफाई, रंग-रोगन, दीपों का प्रकाश और पठाखो की धूम मात्र औपचारिकता है। असल में खुशी तब प्राप्त होगी कि जब हम किसी उदास चेहरे की हँसी बन पाए, किसी बुझे दिल में हरकत पैदा कर सके ताकि उसके हृदय का बोझ हल्का हो सके।

परम्पराएं

गोवर्द्धन पूजन की सामाजिक प्रासंगिकता

डॉ. राकेश तैलंग
कांकरोली, जिला-राजसमंद

भारतीय पुरातन शास्त्रों में श्री कृष्णावतार का उद्देश्य मनुष्य मात्र को यथार्थ और प्रयोजन मूलक कर्म का बोध कराना है और उसी परिणाम परक कर्म की ओर उसे प्रवृत्त करना है। इसीलिए वे अधर्माचरण के उन्मूलन और सद्धर्म की स्थापना हेतु प्रकट हुए थे। प्राकट्य के साथ ही उन्होंने भक्तों के अनुरंजन के लिए अनेक लीलाएं कीं। षडैश्वर्य सम्पन्न व कर्तुमकर्तुम अन्यथाकर्तुम् दृष्टि होने के बावजूद उन्होंने स्वयं को साधारण मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया।

वे कहते भी हैं कि मूलतःत्रिलोकी होने के उपरांत मेरे पास करने को कुछ नहीं, लेकिन लोक में आने के बाद तो आदर्श के रूप में ही कार्य करता हूं। ऐसी व्याख्या वे श्रीमद् भागवत के एकादश स्कंध में उद्धव को उपदेश देते समय करते हैं। दशम् स्कंध में ऐसा ही कर्म संदेश वे रास और गोवर्द्धन लीला में करते हैं। गोवर्धन लीला यथार्थ और प्रयोजन मूलक कर्म का श्रीकृष्ण द्वारा प्रकट दृष्टांत है। वह अधर्माचरण का उन्मूलन और सद्धर्म की स्थापना का संदेश देने वाली लीला है। साथ ही कर्म में विकृति व अरुचि के प्रसंग में कृष्णावतार का प्रयोजन बताने वाला उपदेश है। हमारे देवालयों मे दीपावली के आगामी दिवस पर होने वाला गोवर्द्धन पूजन उसी प्रेरणादायी घटना का आधिदैविक नाट्य है।

कर्म में प्रयोजन को सही अर्थ में न समझ पाने से उत्पन्न विकृति, उसके फल और उससे अनधिकृत व्यक्ति को मिलने वाले लाभों से बचने की चेतावनी के उत्सव का नाम है गोवर्द्धन पूजन। दूसरी ओर सही कर्म के विधान, उसके सुफल और अनुष्ठान से प्राप्त होने वाली सद्गति का गोवर्द्धन पूजन में महत्व का भी निदर्शन किया गया है। इसीलिए गोवर्द्धन पूजन वास्तविक रूप में 'कर्मवाद की पुनर्स्थापना के शिक्षण का पर्व' है।

श्रीमद्भागवत में इन्द्र की सत्ता को बनाये रखने की दिशा में द्वापर युग में स्थापित की गयी गलतफहमियों की ओर संकेत है। यह कि वह प्रसन्न होने पर सुवृष्टि करेगा, ब्राह्मण वर्ग के लिए वह समस्त यज्ञों का अधिपति है, क्षत्रियों के लिए त्रिलोकाधिपति है,वैश्यों के लिए व्यापार और कृषि का एकमात्र सहारा है, अंत्यज वर्ग के लिए उनका पालक है। ऐसा प्रचारित कर मानों इन्द्र ने अपना मानसिक साम्राज्य सम्पूर्ण लोक में फैला रखा था। वह स्वतंत्र देव व स्वर्ग का राजा बनकर अराजक व अवैध कार्य करने को स्वतंत्र हो गया था। सगर द्वारा किए अश्वमेध यज्ञ में घोड़े चुराने वाला, गौतम की पत्नी के साथ अनाचार करने वाला, सप्तर्षियों द्वारा पालकी उठवाने वाला और अंततः वृषासुर को मार ब्रह्म हत्या का भागी बनने वाला हो गया था।

इन्द्र के बलात् सर्वशक्तिमान बनने और ब्रजवासियों को इस तरह भयभीत बनाए रखने की प्रवृत्ति के विरुद्ध जनक्रांति लाने का सत्कार्य किया था श्रीकृष्ण ने। न केवल जन जागरण बल्कि उसकी शक्तियों के समानान्तर प्रकृति पूजन की महत्ता का संदेश देने वाले श्रीकृष्ण भोले विरमाये ब्रजवासियों में अकूत विश्वास भरने वाले मार्गदर्शी प्रेरक थे। कालिय का दमन कर यमुना के शुद्धिकरण का विषय हो या ब्रज का दूध दही मक्खन ब्रज में ही रखने की श्वैत क्रांति या गोधन संरक्षण, वनांचलों से राक्षसों का अंत करने की मुहिम लाने वाले कृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत से प्राप्त होने वाले जनोपादानों का महत्व बता गोवर्द्धन की पूजा की ओर ब्रजवासियों का मार्गांतरीकरण कर दिया। 'कहा करैगो इंद्र हमारी कृष्ण सहाई' कहकर श्रीकृष्ण के नेतृत्व को तब समस्त समाज ने भी माना और 'गोप चले उत्साह सौं पूजन को गिरिराज।'

गोवर्द्धन पूजन कृषक संस्कृति, प्रकृति पूजन, जनाकांक्षी नेतृत्व और तानाशाही शक्तियों के विरुद्ध जन चेतना से उन्हें जवाब देने की सीख लेना सिखाता है। आइये, 'प्रथमहिं दूध न्हवाय बहुरि गंगाजल ढार्यो' की भावना के साथ हम भी अपने घर आंगन में एक छोटा सा गोवर्द्धन सृजित कर परिक्रमा करें और बोलें- 'गिरिराज धरण की जय।'

उच्च शिक्षा के टिप्स

उच्च शिक्षा पर मध्यमवर्गीय परिवार की मनोदशा और उनके सहायक

त्रिलोकी मोहन पुरोहित
साहित्यकार-समालोचक
शांति कॉलोनी, कांकरोली, राजसमंद
Gmail: tmpshreeram@gmail.com

भारतीय मध्यम वर्गीय परिवार में बच्चे को अच्छी शिक्षा दिलाना चुनौती जैसा है। 12वीं कक्षा की परीक्षाओं में सफलता के बाद उच्च शिक्षा दिलाने और अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित कराने में मध्यम वर्गीय परिवार का चिंतन मात्र अकादमिक ही नहीं हुआ करता अपितु, इस वर्ग की अपनी भावनात्मक पूर्ति एवं सामाजिक स्तर को स्तरीय करने की भी चिंता सामने आती है।

भारतीय मध्यम वर्गीय परिवार अपने बच्चों को उच्च शिक्षा इसलिए दिलाना चाहता है कि बच्चों का परिवार के साथ भविष्य सुरक्षित हो जाए। क्योंकि भारतीय परिवार अब भी साथ रहने की पवित्र कामना के साथ हर कार्य को सम्पादित करते हैं। बच्चे चाहते हैं कि वे माता-पिता को साथ रखें और माता-पिता भी अपने बच्चों और आगे की पीढ़ी के मध्य रहने में स्वयं को सुरक्षित समझते हैं। माता-पिता को साथ में रखने वाले परिवारों को समाज में सम्मान के साथ देखा जाना भी परिवार को सूत्रबद्धता के लिए प्रेरित करता है।

माता- पिता बच्चे की अच्छी अकादमिक उपलब्धियों से उच्च पद, समाज में प्रतिष्ठा और गौरव की कामना करते हैं। हर माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चों की अच्छी शैक्षिक उपलब्धियों से उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बने। वे समाज में सम्मान के पात्र बने, जिससे उनको भी सिर उठाकर चलने का अवसर मिले। साथ ही, माता- पिता की यह कामना भी रहती है कि बच्चों के ठीक से पढ़ लिख जाने पर वे सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों का ठीक से निर्वाह कर लेंगे। वे अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक प्रवृत्तियों के संवाहक होंगे। जिससे यह लोक ही नहीं परलोक भी सुधर जाएगा। हर माता-पिता बालकों को सुसभ्य नागरिक, श्रेष्ठ सामाजिक, संस्कृति का संवाहक और मानवीय चेतना से संपन्न व्यक्तित्व के रूप में देखना चाहते हैं। इन्हीं भली कामनों की सम्पूर्णता कराने के लिए बालकों की उच्च शिक्षा के लिए वे कई आर्थिक चुनौतियाँ और ख़तरे भी उठाने को तैयार हो जाते हैं।

उच्च माध्यमिक परीक्षाओं के बाद बालकों की अकादमिक व्यवस्था को लेकर माता-पिता और बालकों के स्वप्न धरातल पर फलीभूत करने की कामना जोर मारती हुई दिखाई देती है। माता-पिता को यह ठीक-ठीक ज्ञान होता है कि उनके बालक का स्तर क्या है? उच्च मानसिक स्तर और कठोर परिश्रमी बालकों को वे प्रशासनिक, रक्षा, चिकित्सा, यांत्रिकी, विधि, प्रबंधन, बैंकिंग, आर्थिक, कृषि, अनुसंधान, व्यावसायिक और शिक्षा आदि क्षेत्रों में उच्च पद पर सफल और गौरवमयी व्यक्तित्व के रूप में देखना चाहते हैं। मध्यम स्तर के बालकों को वे उक्त क्षेत्रों में ही किसी ना किसी सेवा में सहायक के रूप में देखना चाहते हैं, उच्च पद प्राप्ति को वे बालक के परिश्रम और प्रभु कृपा मानते हैं। सामान्य स्तर के बालकों को वे पारंपरिक रोजगार कार्यों, कृषि, श्रम, उद्योग संस्थानों आदि क्षेत्रों में किसी न किसी छोटी-बड़ी भूमिका में देखना चाहते हैं। माता-पिता और बच्चों की सपने की उड़ान यहीं से प्रारंभ होती है।

माता-पिता और बालकों को अपने सपनों की सफल उड़ान भरना आसान नहीं होता है। उनके सामने आर्थिक पक्ष एक बड़ी समस्या बन कर सामने आता है। जिसके लिए परिवार में मुख्य रूप से पिता खतरे उठाने को भी तैयार हो जाता है। इसके पीछे तीन मुख्य मनोदशाओं को चिह्नित किया गया है-

1. कर्तव्य पालन की भावना

माता-पिता बालकों को स्तरीय और जीवन को निर्वाह करा देनी वाली शिक्षा दिलाना अपना कर्तव्य समझते हैं। भारतीय समाज की पारिवारिक संरचना में यह दायित्व बोध परिवार को एक सूत्र में बाँधे रखता है। वहीं, यह मौन रूप से संघर्ष का प्रस्तावक भी है। इस हेतु अभिभावकों अतिरिक्त रूप से भी काम करना पड़ता है।

2. दुविधा:

बेट और बेटियों की आकांक्षाओं की भिन्नता को लेकर माता-पिता दुविधा में

देखे जाते रहे हैं। क्योंकि बेटे की आकांक्षाएं अधिकतर बेटी की आकांक्षाओं से मेल नहीं खाती हैं। बेटे प्रतिस्पर्धात्मक पाठ्यक्रमों की तरफ तो बेटियाँ कलात्मक विषयों की ओर आकर्षित हुए देखी गई है। आजकल बेटियाँ भी बेटों की तरह हर क्षेत्र में चुनौतियाँ समान रूप से स्वीकार करते हुए देखी गई हैं। लेकिन, असमान रुचियों और कामनाओं से अभिभावकों पर अतिरिक्त आर्थिक भार बढ़ जाता है। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए अतिरिक्त श्रम करते हैं, अपने खर्चों में कटौतियाँ करते हैं, कर्ज लेते हैं। कभी-कभी चल-अचल संपत्तियों को गिरवी रखने को भी विवश हो जाते हैं।

3-मार्गदर्शन- इस समय माता-पिता और बच्चों का उचित मार्गदर्शन बहुत आवश्यक है। अधिकतर अभिभावकों को यह समय उलझनों भरा लगता है । वे निर्णय लेने में समर्थ नहीं लगते हैं। सही करियर काउंसलिंग इस हेतु बहुत आवश्यक है। एक प्रशिक्षित करियर काउंसलर ही बालक की योग्यता एवं रुचियों का विश्लेषण कर उचित पाठ्यक्रम और परिवार की आर्थिक क्षमताओं का आकलन करता है। उसके बाद ही आर्थिक व्यवस्था एवं बालकों के लिए उचित पाठ्यक्रम के लिए मार्गदर्शन किया जाता है। उचित और प्रशिक्षित काउंसलर के अभाव में ग़लत पाठ्यक्रम का चुनाव और, आर्थिक उलझनों की प्रबल संभावनाएँ बन जाती हैं। यह परिवार के लिए शुभ नहीं होगा।

स्वप्न की उड़ान को सफलता पूर्वक पूरी करने के लिए माता-पता के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव निम्नानुसार हैं-

व्यवहारगत सुझाव

- बालकों को समय दीजिए और उनके साथ समय व्यतीत करें।
- बालकों के लिए सहयोगी बनें एवं अपने व्यवहार से सभ्य जीवन-शैली का दिग्दर्शन कराइए।
- बालकों की उच्छृंखल और उद्दंड व्यवहार को बढ़ावा नहीं देना चाहिए।
- अच्छे परामर्शदाता से मिलें। मार्गदर्शन लीजिए और योजना के साथ अपने आर्थिक व्यवहार का निर्धारण कीजिए।
- बालकों में डिजिटल अनुशासन विकसित कराएँ। स्क्रीन के समय को नियंत्रित कीजिए। रचनात्मक तकनीक के प्रयोग में लगाएँ।
- उसे सामाजिक बनाए रखें। पारिवारिक कार्यों में भागीदार बनने के लिए प्रेरित करें।
- अन्य बालक से तुलना कर उसकी कमियों व असफलताओं को लेकर लज्जित नहीं करें।
- बालकों से पीछा छुड़ाने के तुच्छ प्रयासों से अपने आप को अलग रखें।
- बालक की उपलब्धियों को देख प्रेरित करें।
- संतुलित दिनचर्या सिखाएँ।
- संबंधों के महत्त्व को समझाएँ। सप्ताह में एक दिन हल्के माहौल में पूरे परिवार के साथ बैठें, बात करें । बच्चों को बोलने और अपनी बात कहने का अवसर दें।
- समस्या के समाधान हेतु बालकों के विचारों को स्थान दीजिए।
- जीवन मूल्य व सामाजिक मूल्य को समझाएं
- बालकों को परिवार के बुजुर्गों का आदर करना सिखाएँ और उन के साथ समय बिताने के लिए प्रेरित करें।

शिक्षा आधारित सुझाव

- बालकों को सीखने और निर्णय लेने के अवसर दीजिए। बालक प्रशिक्षण से, देखकर और स्वयं द्वारा कार्य कर के ही सीखता है।
- बालकों में शैक्षिक के साथ सह-शैक्षिक प्रवृत्तियों में समान रूप से भागीदार होने के लिए निरंतर प्रेरित करें।
- बालकों को व्यावहारिक बनने दें। कल्पनाशील होना अच्छा है। लेकिन, वास्तविकता का बोध कराते रहिए।
- 4. बालकों को समकालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर कलात्मक और व्यावहारिक विज्ञान से जोड़े रखें।
- बालकों की रुचि व योग्यताओं को समझें।
- पठन-पाठन की संस्कृति से जोड़ें और पुस्तक मित्र बनाएं

स्वास्थ्य आधारित सुझाव

- बालकों में किसी भी प्रकार की शारीरिक, मानसिक या जीवन मूल्यों को लेकर कमी, उलझन और असंगत व्यवहार अनुभव होने पर चिकित्सक और मनोविज्ञानी महानुभावों से परामर्श लीजिए।
- बालकों की कमियों को दबाने और छिपाने से बचें । निदानात्मक और उपचारात्मक प्रक्रिया से जुड़ें।कमियों को धैर्य पूर्वक दूर करने में सहयोग कीजिए।
- बालकों को चुनौतियों को स्वीकार करने दें। बालक को उचित समय पर उचित संरक्षण दें और मार्गदर्शन करें।

आर्थिक व्यवस्था हेतु सुझाव

- अच्छे परामर्शदाता से मिल मार्गदर्शन लें।
- आर्थिक संकोच को दूर करने के लिए आर्थिक स्रोत और उसकी संपूर्ण प्रक्रिया को जानिए जैसे, बैंक ऋण योजना आदि।
- व्यावहारिक आर्थिक योजना बनाएं।
- आर्थिक व्यवहार का निर्धारण कर उसकी पालना करने का अभ्यास कीजिए।

अभिभावकों की जानकारी में कुछ आर्थिक स्रोतों और योजनाओं को भी बताना उचित समझते हैं। जिनके द्वारा

बालकों की उच्च शिक्षा के लिए वित्तीय संकट कम हो सकता है और, वे महंगी शिक्षा से निपट सकेंगे। साथ ही शिक्षा के लिए वे राशि खड़ी कर सकेंगे। इस हेतु सुझाव निम्नानुसार हैं -

दीर्घकालिक आर्थिक व्यवहारगत योजना

शिक्षा के लिए फंड निर्माण: म्यूचुअल फंड्स में नियमित एस आई पी, सावधि जमा, और सरकारी योजनाओं जैसे सुकन्या समृद्धि योजना के माध्यम से बचत करना प्रारंभ कर दीजिए।

बीमा व सुरक्षा योजना: टर्म इंश्योरेंस, जीवन बीमा व हेल्थ इंश्योरेंस अपनाने से आकस्मिक आर्थिक संकट से बचा सकते है।

वित्तीय योजना का पुनर्मूल्यांकन: समय-समय पर निवेश पोर्टफोलियो की समीक्षा करना सीखिए और अनुकूल व्यवहार कीजिए।

बच्चों की शिक्षा हेतु योजना बनाना: बच्चे के शैक्षिक विकास और रुचि के अनुसार निजी और सरकारी छात्रवृत्तियों, सहायता योजनाओं का उपयोग कीजिए। इस हेतु योजनाओं को जाने, समझें और लाभ लेने के लिए व्यवहार तय कीजिए।

निवेश विविधीकरण: म्यूचुअल फंड्स, गोल्ड, एफडी आदि में निवेश का संतुलित मिश्रण कर आर्थिक व्यवहार को धरातल पर उतारें।

अल्पकालिक आर्थिक व्यवहारगत योजना

मासिक और वार्षिक बचत लक्ष्य निर्धारण: परिवार की आय और खर्चों के अनुसार शिक्षा बचत के लिए बजट बनाएं। उसे निरंतर रखें।

शिक्षा ऋण और छात्रवृत्ति जानकारी: सरकारी और गैर-सरकारी योजनाओं का अध्ययन कर सही समय पर ऋण आवेदन या छात्रवृत्ति हेतु आवेदन कीजिए।

अतिरिक्त आय के स्रोतों की खोज: अतिरिक्त आय के लिए पार्ट-टाइम काम, निवेश से आय आदि को अपनी क्षमताओं के अनुसार स्वीकार कीजिए।

खर्चों पर नियंत्रण: अनावश्यक खर्चों को कम करना और बजट के भीतर रहना सीखिए।

आर्थिक आपातकालीन फंड बनाना: अप्रत्याशित खर्चों के लिए अलग से आपातकालीन निधि निर्माण कीजिए।

परिवार इस प्रकार की व्यवस्थित योजना से बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो सकते हैं। दीर्घकालिक योजना भविष्य की बड़ी जरूरतों को पूरा करती है, जबकि अल्पकालिक योजना दैनिक और वार्षिक आवश्यकताओं को नियंत्रण में रखती है। साथ ही, वित्तीय जागरूकता और समय पर योजना में बदलाव की क्षमता भी जरूरी है।इस योजना में शामिल प्रमुख तत्त्वों में शिक्षा ऋण, सरकार की छात्रवृत्ति योजनाएँ जैसे, प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा प्रोत्साहन योजना, पीएम विद्यालक्ष्मी योजना, निवेश के साधन और बीमा योजनाएं शामिल हैं, जो मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए विशेष रूप से लाभकारी हैं। आशा है, हमारा यह प्रयास आपके सपनों की उड़ान को यथार्थ रूप देने में सहायक सिद्ध होगा।

अपनी भूमिका में आप खरे उतरें। अपनी ठोस योजनाओं से घर के दीपकों को आलोकित कीजिए। आनंदित रहते हुए सपरिवार प्रतिष्ठा प्राप्त करें। परिवार, समाज और देश को मजबूत बनाते रहें। निरंतर आगे बढ़ें। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, आप सभी का हार्दिक अभिनंदन।

प्रकाशमान है सारा जग
धरती अम्बर भी जग-मग।
ख़ुशियाँ बिखरी हैं पग-पग
चकाचौंध हो रहे हैं दृग॥
प्रसन्न हैं उड़ते खग-विहग
कुलाँच मारते ठिठके मृग।
खिली हुई है हर रग-रग
रोशनियाँ देखो लेती ठग॥
नृत्यरत नव नूपुरित पग
नैना डोल रहे डग-मग
मीत क्यों तुम खड़े विलग
मिलो भातृवत् सीने लग॥

डॉ. आनन्द श्रीवास्तव
श्री राधिका हॉस्पिटल, कांकरोली
मो. 94141-71606

खूब आनन्द ऊँ मनावों दिवाळी

खूब आनन्द ऊँ मनावों,
पाँच दनां रा त्यौंवार,
खूब भंडार भरे आप रा,
खुस रे आप रो परिवार।

तरे-तरे री खरीदारियां करो,
घर ने देवों नवों आकार,
लछमी पूजन मन ऊँ करो,
आप रा हपना वे साकार।

खूब आप मिठायां खावों,
खूब खावों आप डकार,
रूप निखार न आपाणों,
आप घूमों खूब बजार।

चत्तमन ऊँ गोवर्धन पूजों,
गाया ऊँ गचरावों बार-बार,
माया-बाया सब रे घरे जावों,
आसीरवाद लेवों आप हजार।

भाई दूज रे दन भी भाईड़ा,
बेना रो खूब करो सतकार,
मोटी वे तो आसीरवाद लो,
छोटी ने दो खूब लाड-प्यार।

ओ तो आपाणों देस है राजन,
जो मनावां अतरा त्यौवार,
नी तो विदेस्यां ने देखी रो,
गुंगळी गाल न पड्यां रे यार।

पाँच परवां री हंगळा
भाई-बेना ने,
घणी-घणी शुभकामना सा।

राजेन्द्र सनाढ्य राजन
वाइस प्रिंसीपल
राउमावि नमाना
नि. कोठारिया, राजसमंद
मो. 99829-80777

दीपोत्सव की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
पर्यावरण विकास संस्था एवं सदस्यगण
मार्बल माइंस आनर्स एसोसिएशन
एवं समस्त सदस्यगण-राजसमंद
गौरवसिंह राठौड़
अध्यक्ष- मार्बल माइंस ऑनर्स एसो.
रामनारायण पालीवाल
अध्यक्ष- पर्यावरण विकास संस्था

।। शुभ दीपावली ।।
पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ
MIRAJ
GROUP
SINCE1987
आपका विश्वास ही हमारी पहचान
FMCG
PIPES & FITTINGS
PRINTING & PACKAGING
REAL ESTATE
CINEMAS
MADAN PALIWAL MIRAJ SPORTS CENTRE
HOTELS & RESORTS
www.mirajgroup.in

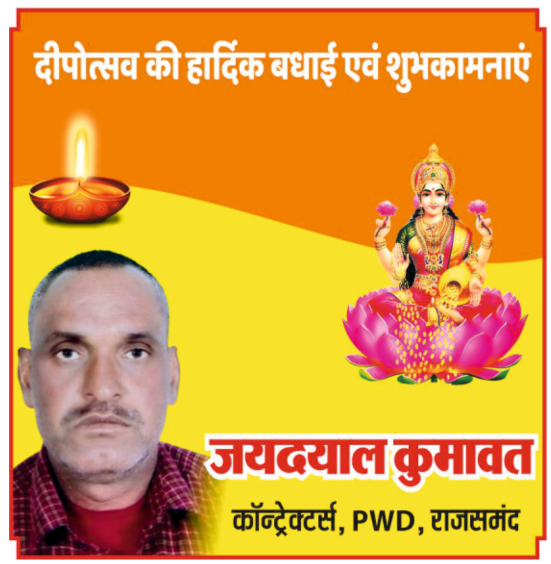
दीपोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
जयदयाल कुमावत
कॉन्ट्रेक्टर्स, PWD, राजसमंद

दीपावली के पावन पर्व की समस्त
जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
अपील
पानी की बूंद- बूंद को बचाएं।
अधिकाधिक पौधरोपण करें।
अपने घर व मोहल्ले में स्वच्छता बनाएं
रखें। जन्म- मृत्यु पंजीयन अवश्य करें।
देऊदेवी चौधरी
प्रशासक- ग्राम पंचायत कुरज, प.स. रेलमगरा, राजसमंद

रामराज्य

घर घर दीप जलाएं,
आओ खुशियां मनाएं,
चहूं ओर प्रकाश फेलाएं,
अपने अंतर तम को मिटाएं।
घर घर दीप जलाएं,
आओ खुशियां मनाएं,
विदेशी मोह को त्यागकर,
अब स्वदेशी वस्तुएं ही लाएं।
घर घर दीप जलाएं,
आओ खुशियां मनाएं,
श्री धनवंतरीजी की पूजा कर,
आरोग्य तन का शुभाशीष पाएं।
घर घर दीप जलाएं,
आओ खुशियां मनाएं,
मां लक्ष्मी की कर आराधना,
सुख-समृद्धि का आशीष पाएं।
घर घर दीप जलाएं,
आओ खुशियां मनाएं,
आतंक और अत्याचार का,
अंत करने अब एक हो जाएं।
घर घर दीप जलाएं,
आओ खुशियां मनाएं,
मर्यादा पुरुषोत्तम का संदेश,
ऊंच-नीच का भेद मिटाएं।
घर घर दीप जलाएं,
आओ खुशियां मनाएं,
करना है संकल्प साथियों,
अब विश्व में रामराज्य लाएं।
घर घर दीप जलाएं,
आओ खुशियां मनाएं,
भारत को विश्व गुरु बनाएं,
जय श्री राम, उद्घोष लगाएं।
घर घर दीप जलाएं,
आओ खुशियां मनाएं,
अवधपुरी सजी-धजी है,
भारतवर्ष दिपावली मनाए,
घर घर दीप जलाएं,
आओ खुशियां मनाएं,
गोवर्धन की पूजा करके,
भाईदूज का हम पर्व मनाएं।
घर घर दीप जलाएं,
आओ खुशियां मनाएं,
कहता है प्रीतम आपको,
हम भारतवासी एक हो जाएं।

बख्तावरसिंह चुंडावत प्रीतम
आमेट, राजसमंद, 9413287301

दीपोत्सव में बदलाव

दीपावली तब और अब

चतुर कोठारी

शिक्षाविद् व साहित्यकार

कोठारी सदन, राजनगर

मो. 94608-55853

मर्यादा पुरुषोत्तम राम, लीला पुरुषोत्तम कृष्ण और तीर्थंकर महावीर अर्थात सम्पन्न कृषक व संयम त्याग की संस्कृतियों में दीपावली महोत्सव धनतेरस, रूप चतुदर्शी, दीपावली, खेंखरा व भाई दूज इन पांच दिनों तक विविध आयामों के रूप में मनाई जाती है। इस दृष्टि से बीसवीं व इक्कीसवीं शताब्दी के इन दो आईनों में झांके तो शिक्षा, आर्थिक सम्पन्नता, विज्ञान एवं तकनीक के कारण इन उत्सवों में बहुत बड़ा बदलाव देखने को मिलता है।

भारतीय सनातन संस्कृति राम और कृष्ण से प्रभावित है, तो संयम और त्याग की संस्कृति महावीर से। यो दीपावली उत्सव राम के 14 वर्षों के वनवास के बाद पुनः अयोध्या लौटने की प्रसन्नता का प्रतीक है, तो जैन संस्कृति में महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में मान्य है। यहां मोटे मोटे रूप में देखे तो राम, लक्ष्मण और सीता तीनों अयोध्या के महान धन स्वरूप है। इनके आगमन से मानो अयोध्या में धन की फिर से वर्षा हो गई। तब से धनतेरस के दिन प्रतीक स्वरूप गजानंद, लक्ष्मी और सरस्वती के साथ सोना- चांदी, सिक्के व नए बर्तनों की पूजा की जाती है। सामायिक परिवर्तन के साथ आज भी चाहे सनातन या जैन का घर हो, धन की पूजा किसी न किसी रूप में की जाती है। कारण की जीवन यापन का मूल आधार धन जो है।

अपनों के 14 वर्ष बाद घर लौटने पर घर, गांव, गाली, मोहल्लो में रोशनी स्वरूप परिवर्तन हुआ। पहले मिट्टी व चूने से लीपा पोती कर घर के आंगन व दीवारों का रूप चमकाया जाता था। गांवों में गेरू के प्रयोग से कलात्मकता दिखाई जाती थी और मिट्टी के दीपक जलाकर सजावट व सुन्दरता को अन्तिम रूप दियाप जाता था, पर अब मकाले की शिक्षा के दुष्परिणाम से हाथ उद्योग, गृह उद्योग व ग्राम उद्योग नष्ट प्रायः होकर फैक्ट्री, उद्योगों के विकास के कारण मिट्टी के दीपक, रूई की बाती और तिल के तेल की जगह बिजली के बल्बों की जगमग की जाने लगी है। पहले वर्षा ऋतु के बाद मिट्टी दीप जलने से पर्यावण युद्ध होता, प्राणवायु की वृद्धि होती और शरीर, मन व मस्तिष्क जगमगा उठता। अब बिजली के बेहिसाब खर्च से घर के बजट पर भारी प्रभाव पड़ने लगा है। फलस्वरूप त्यौहार के बाद घर के अन्य खर्चों में कटौती की सोच का उपयोग करना पड़ता है।

दीपावली पर अब मिट्टी और चूने के स्थान पर फैक्ट्रियों में तैयार विभिन्न प्रकार के रंग व खाखरे की जड़ की कूंची की जगह जानवरों के बालों के ब्रश काम में लिए जाते हैं, जो हिंसा का प्रतीक तो है ही, साथ ही सीलन के कारण किया हुआ रंग रोगन कुछ दिनों बाद पपड़ियों में बदल दीवारों पर विभिन्न रूपों में डिजाइनों में नजर आने लगता है। पूजा में प्रयोग होने वाले फलों पर रसायन छिड़का हुआ मिलता है, जो उपयोगकर्ता को शारीरक नुकसान पहुंचाता है। पूजा में प्रयोग आने वाले प्रसाद पहले शुद्ध व ताजा घी से बना हुआ मिलता था, जिसे पूजा के बाद घर घर पहुंचाया जाता और सप्ताहभर काम लेने पर भी शरीर को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाता था, पर अब मावे और आलू और मिटाइयों में विभिन्न रंग व गिलट बर्क के उपयोग से प्रसाद स्वरूप बाजार से खरीदी गई मिठाई एक दो दिन में ही खराब होने लगती है व शरीर के लिए नुकसानदायक बन जाती है। पूजा में काम में लिया जाने वाला कुमकुम भी मिलावट के कारण अपना स्वरूप नहीं दिखा पाता है। दवात पूजा में काम लिए जाने वाले बही खातों के साथ अब रजिस्टरों व कॉपियों का उपयोग बढ़ गया है। पहले काली स्याही दीपावली के दस पन्द्रह दिन पहले घोट घोट कर तैयार की जाती और वर्षभर लिखने में काम आती थी। बाद में फैक्ट्रियों से लाल, हरी व नीली स्याही की दवाते आने लग गई। पहले चाकू से बांस की कलम बनाकर लिखा जाता था। कलम को पीतल के कलमदान व काली स्याही को पीतल की ढक्कनदार दवात में खूब रखी जाती थी।

इसके बाद निप और होल्डर आया, फिर स्याही वाला पेन और आजकल थोक के भाव तरह तरह के रंगवाले बालपेन लिखने के काम आ रहे हैं।

चौपड़ो पर कुमकुम से 9-7-5, 3.2वां टौंकी लगाई जाती और पवित्रता स्वरूप कोरा पान व लच्छा बांध शुभ मुहूर्त में पूजा विधि का लेखन कर हस्ताक्षर किए जाते। सम्पन्न व्यक्ति अपने प्रतिष्ठानों, दुकानों पर पंडित से पूजा कराते। बैंड बाजते, ढोल बजाते व प्रसाद बांटते। अधिकतर व्यक्ति अपने ही घरों में पूजा स्थल पर दीपावली पूजन करते। महिलाएं सोलह श्रृंगार करती और पुरुष नवीन परिधानों से सजते। अतिसम्पन्न व्यक्ति अब दीपावली के दो तीन पूर्व ही मिठाई के पैकेट परिचितों व संबंधियों के यहां भेजकर घर निर्मित शुद्ध प्रसाद का अहसास कराते हैं। घर में शुद्ध घी के पकवान बनाए जाते। मंदिरों में विशेष रूप से आयोजन किए जाते हैं।

जैन संस्कृति जो संयम त्याग की संस्कृति है और महावीर के निर्वाण के दिवस होने से कई व्यक्ति माला, जप, तप व उपवास रखते हैं अर्थात निराहार रहकर महावीर के उपदेशों को स्मृति में ला दिवस मनाते हैं, लेकिन अधिकतर घरों में सनातन सस्कृति की परम्परानुसार दीपावली का पर्व मनाते हैं।

दीपावली के बाद का दिन कृष अर्थात किसान संस्कृति का दिन है। भारत चूंकि गांवों का देश है। भारत की आत्मा गांवों में बस्ती है। गांव का जीवन प्रायः कृषि, बैल, गाय व अन्य पशुओं पर आधारत है। अतः दीपावली के दूसरे दिन किसानों के हमजोली बैलों को स्नान करा, मोरपंखों व रंगों से सजाया जाता है। लपसी खिलाई जाती है। गांयों, बछड़ो, भैंसो आदि के सींगों पर रंग उकेर सजाया जाता है। गांव के एक महत्वपूर्ण स्थान पर खेंखरा स्वरूप बैलों की पूजा कर आरती उतारी जाती है। फिर उन्हें भड़काया जाकर दिशाओं से सुन्दर भविष्य का शकुन लिया जाता है, पर अब ट्रेक्टर आ जाने से बैलों का उपयोग नहीं के बराबर रह गया है। किसान अब उन्हें भार स्वरूप मानने लगा है। अतः अब पशुपालकों की सोच भी बदलकर अति स्वार्थी व लालची हो गई है। अब बैलों, बिना दूध, बीमार व वृद्ध गायों तथा अन्य मूक पशुओं को बूचड़ खाने भेजकर आर्थिक लाभ कमाने की ओर मुखर हो गई है। इस दृष्टि से अब कई स्थानों पर खेंखरे का आयोजन मिट सा गया है। यद्यपति मंदिरों व गऊशालाओं में यह उत्सव अब भी चालू हैं।

भाईदूज पर बहन भाई की पूजा अर्चना कर अपनी खुशियां बिखेरती है, पर शिक्षा व नौकरियों के कारण स्थानों की दूरी, समयक कमी व बजट के कारण यह उत्सव अब फींका फींका सा रह गया है। सभी दृष्टि से देखा जाए तो शिक्षा के बढ़ते प्रभाव, अर्थ की विषमता, विज्ञान के विकास व तकनीक के कारण खुशी के प्रदर्शन का स्वरूप बहुत बदल गया है। इन त्यौहारों पर पहले फुल झड़ियां, तिड़तिड़ी व भीत भड़ाके छोड़ अपनी खुशी का प्रदर्शन किया जाता था, मगर अब कोठी, बम, हवाई होर्न व अन्य विविध आयामी पटाखों से कुछ क्षण की खुशी तो दिखाई देती है, मगर जब कई प्रकार के पटाखों से बिजली शोर्ट सर्किट हो जाता है, घास व दुकानों, फैक्ट्रियों में आग लग जाती है, तब प्रसन्नता निराशा में बदल जाती है।

आज निठ्ठली युवा शक्ति, कर्तव्यहीन के साथ नशे में सराबोर हो देश के विकास को विनाश में बदल देती है, तो लगता है कि बीसवीं सदी से इक्कीसवीं सदी की दीपावली मानवता के विकास व विनाश दोनों की प्रतीक है। क्योंकि अब प्रेम, भाईचारा व सहयोग का परिवार व समाज में दिखावा मात्र रह गया है।

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

दीपावली के इस पावन पर्व पर आपके जीवन में सुख, शांति और समृद्धि का प्रकाश बना रहे।

मोहनलाल गुर्जर
संचालक

श्री बालाजी इंटरप्राइजेज

चिकलवास, ग्राम पंचायत सांयो का खेड़ा, जिला- राजसमंद

बुद्धिबेचकों का षड़यंत्र, दुर्जनों का पाखण्ड

दीपक आचार्य
पूर्व डिप्टी डायरेक्टर सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, बांसवाड़ा
मो. 94133-06077

इतिहास और सत्य में कहीं कोई मिलावट नहीं होती। ये जैसे होते हैं वैसे ही समुदाय के सामने परोसना चाहिए ताकि वर्तमान को हमेशा पुराने अनुभवों का लाभ मिले। इंसान की कुल औसत आयु का अधिकांश समय पढ़ाई-लिखाई और घर-गृहस्थी या सांसारिक प्रपंचों में गुजर जाता है। उसे ज्ञान और अनुभव पाने के लिए बहुत समय चाहिए, पर मिलना संभव नहीं है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य के लिए श्रेष्ठतर यही रहता कि पुरानी पीढ़ी के अनुभव व ज्ञानराशि की जानकारी मिले, ताकि वह सीख और सबक के साथ अपना जीवन सँवार सके।

इस दृष्टि से इतिहास, पुराने समय की हलचलों, लोगों के व्यक्तित्व और प्रभावों से भिज्ञ होना नितान्त जरूरी है। लेकिन हमारा समुदाय, परिवेश, ज्ञानवान विद्वान एवं अनुभवी लोगों के लोक व्यवहार की थाह पाना एक सीमा तक ही संभव है क्योंकि अधिकांश लोग भूत को भुलाते हुए वर्तमान में जीना अधिक पसन्द करते हैं। हम में से कुछ फीसदी को छोड़ दें तो तकरीबन सारे ही इस स्थिति में दिन काट रहे हैं। हमारा, समाज और देश का दुर्भाग्य है कि हमें यही सिखाया गया है कि पुरानी बातों को याद न करें और आगे बढ़ते रहें। यही वह बहुत बड़ी वजह है कि हमारी वर्तमान पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के ज्ञान और अनुभवों से रूबरू नहीं हो पा रही है। और इससे भी बड़ा दुर्भाग्य यह कि हमें आलोचना और निन्दा के बीच के फर्क को कभी समझाया नहीं गया।

देश के धूर्त्त, ढोंगी और मक्कार बुद्धिजीवियों की यह चालाकी रही है कि उन्होंने बुरे और वर्जित कर्मों, कटु अनुभवों, अनाचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, पैशाचिकता और अमानवीयता से लेकर उन सभी दुर्गुणों को निन्दा की श्रेणी में डालकर इन पर चर्चाएं करने पर पाबन्दी ही लगा दी है। इस वजह से समाज और देश में दुष्ट बुद्धि के आसुरी लोगों के कुकर्मों पर हमेशा परदा ढका रहता है। कोई इनका जिक्र कर वर्तमान पीढ़ी को आगाह भी करना चाहे तो साफ-साफ कह दिया जाता है कि किसी की भी निन्दा न करें, इससे महापाप का भागी होना पड़ता है।

यहां तक कि समाज और देश की दुर्दशा करने वाले, महाभ्रष्ट, राक्षसी स्वभाव वाले, अनाचार, अत्याचार और लूट-खसोट जैसी आदत वालों की मौत के बाद कोई इनकी असलियत सभी के सामने रखना चाहे तो उसे भी यह कहकर रोक दिया जाता है कि मरने वाले के बारे में कोई जिक्र या निन्दा नहीं करनी चाहिए। वर्तमान पीढ़ी अपने व्यक्तित्व विकास और समाज तथा देश के उत्थान के लिए समर्पित होकर काम करना चाहती है। वह यह भी चाहती है कि हमसे पहले के लोगों ने जो कुछ खोटे कर्म किए, उनकी जानकारी पाकर सबक लेकर तथा उनके अच्छे कामों से सीख लेकर आगे से आगे बढ़ा जाए। लेकिन ऐसा हो नहीं पाता।

इसका मूल कारण यह है कि समाज में सज्जनों को संरक्षण देने की बजाय दुर्जनों की गलतियों, कुकर्मों और पाखण्ड पर हमेशा परदा डाले रखने की मंशा से सत्याभिव्यक्ति को निन्दा की श्रेणी में डाल दिया गया है। जबकि शाश्वत सत्य यह है कि किसी गलत को गलत कहा जाए, वह आलोचना की श्रेणी में आता है। इसका कोई पाप नहीं है बल्कि यह सभी का

कर्तव्य है। जबकि अच्छे को गलत कहा जाए, उसे निन्दा माना जाता है। चतुर सुजान बुद्धिजीवियों ने स्वयं तथा पुरानी पीढ़ी के कुकर्मियों की गलतियों को ढके रखने की गरज से इसे निन्दा के पाले में डाल दिया है। मौलिक सच्चाई को अभिव्यक्त करें तो इसे नकारात्मक मनोवृत्ति की संज्ञा दे डालने में भी लोग पीछे नहीं रहते। दुश्चरित्र नरपिशाच सच्चाई को न सुनना चाहते हैं, न देखना। इनका जीवन भर का एकसूत्री एजेण्डा यही रहता है कि वे चाहे जो खोटे कर्म, भ्रष्टाचार, पापाचार, कमीशनखोरी, अत्याचार, अनाचार, चोरी-डकैती, लूट-खसोट, अतिक्रमण, ड्यूटीचोरी आदि सभी संभव कुकर्म करते हुए धन-वैभव, भोग-विलासिता और मिथ्या प्रतिष्ठा प्राप्त करते रहें, उन्हें कोई कुछ कहने वाला न हो।

वे नॉन स्टॉप मानवता की हत्या करते रहें। न उन्हें कोई कुछ कहे, न उनके संगी साथियों को। जैसा हो रहा है, होने दो, जैसा चल रहा है चलने दो। जरा कहीं कोई सच्चाई सामने रख दे तो भड़क जाते हैं, कुत्तों की तरह भौंकाल मचा देते हैं और माहौल इतना अधिक बिगाड़ देंगे कि इनके जैसे सारे पाखण्डी और पापाचारी एक होकर पीछे पड़ जाएंगे। उलाहना देते रहेंगे - जैसा हो रहा है होने दो, तुम्हारे बाप का क्या जाता है, नकारात्मकता और निन्दा अच्छी बात नहीं है। कोई यह नहीं कहता कि सत्योद्घाटन होने के बाद उनमें अक्ल आ गई है और अब धूर्तता, मक्कारी और भ्रष्टाचार नहीं करेंगे। समाज, क्षेत्र और देश में हर कहीं जिन्दगी भर नकारात्मक काम, अपराध और पापाचार करते रहने वाले लुच्चे-लफंगे और टुच्चे लोग सत्य सामने आने पर इसी तरह प्रतिक्रियावादी हो उठते हैं।

उनसे कोई पूछे कि जो लिखा जा रहा है उसमें असत्य क्या है? तो वे उत्तर देने की बजाय यह नसीहत देते हैं कि नकारात्मकता और निन्दा से बचना चाहिए। हमारी पुरानी पीढ़ियों में भी ऐसे तटस्थ और मूकद्रष्टाओं की कोई कमी नहीं थी जिन्होंने कभी भी सच को सामने नहीं आने दिया, कुकर्मियों के पाखण्ड पर परदा डालते रहे और इसी वजह से आज समुदाय, क्षेत्र और देश में कुप्रथाएं, अनाचार और व्यभिचार बढ़ता जा रहा है।

अपराधियों, दुराचारियों और स्वार्थों में जीने वाले इन्हीं बुद्धिबेचकों के कारण झूठे-मक्कार, बेईमानों और भ्रष्टाचारियों को प्रश्रय भी मिलता रहा है और सम्मान-प्रतिष्ठा भी। तटस्थ और मूकद्रष्टा होकर अनाचार और अत्याचार करने और चुपचाप देखते रहने वालों के कारण ही देश की दुर्गति हो रही है। जहां जो गलत, नीतिविरूद्ध, धर्म और शास्त्र विरूद्ध और मानवीय संस्कारों के विरूद्ध हो, उसे निर्भयतापूर्वक समाज के समक्ष रखना साहस और चिन्तन भरा कार्य है और जो ऐसा कर पा रहे हैं वही वस्तुतः इंसान हैं। शेष या तो निर्वीर्य नपुंसक हैं, या वर्णसंकर, पशुबुद्धि श्वानवंशीय या किसी न किसी आका के पाले हुए पालतू।

प्रेरणास्पद

विद्यार्थी जीवन में सफलता के सूत्र

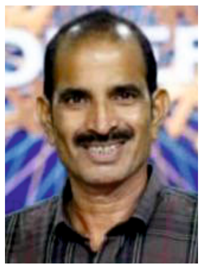

गोविन्द सनाढ्य
20 बार एमए, 3 डिप्लोमा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड) व शिक्षक
सेठ भगवानदास जी की हवेली
कांकरोली, जिला राजसमंद

एक शाश्वत सत्य है कि सफलता की मंजिल परिश्रम के पुष्कर मार्ग से होकर गुजरने पर ही प्राप्त की जा सकती है। अर्जुन सा तीरंदाज बनने के लिए उनके जैसा निरन्तर, नियमित अभ्यास करना होता है। मिसाइलमैन डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम सी शोहरत पाने के लिए स्वयं को प्रयोगों की प्रयोगशाला में झोंकना होता है। आईएएस या आरएएस अथवा ऐसी ही कोई नौकरी पाने के लिए अध्ययन और अभ्यासरूपी तपस्या का मार्ग विद्यार्थी को अपनाना होता है। आलस्य और विलासिता का तपस्या और परिश्रम से कोई मेल नहीं है। अध्ययन, स्वाध्याय और अभ्यास भी एक प्रकार की तपस्या ही है।

विद्यार्थी के जीवन को तपस्वी जीवन माना जाता है। विद्यार्थी जीवन को एक महत्वपूर्ण संस्कृत श्लोक द्वारा स्पष्ट किया गया है। इस श्लोक की व्याख्या मैंने स्वयं को एक विद्यार्थी के तौर पर रखकर की है। विद्यार्थी इस श्लोक को आत्मसात कर अपने निर्धारित लक्ष्य को निश्चित प्राप्त कर सकते है।

'काक चेष्टा, बकोध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं।।

(1) काक चेष्टा : Effort of a Crow

Effort= Persistance + Patience+ Hard Work

अफोर्ट का आधार है, प्रयासों की दृढ़ता, धैर्यता एवं कड़ी मेहनत। कोआ उपर्युक्त गुणों के कारण ही अपनी प्यास बुझाकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। ये तीनों गुण एक विद्यार्थी में होना अति आवश्यक है।

(2) बकोध्यानमः Focus Like a Crane

एक विद्यार्थी के लिए यहां Focus से तात्पर्य है Focus on Your Goal, बगुला (Crane) अपना सारा ध्यान बड़ी मछली (Main Goal) पर केन्द्रित करता है, हालांकि उसके सामने छोटी- छोटी ढ़ेरों मछलियां भी गुजरती रहती है और बगुला उन छोटी- छोटी मछलियों को खाकर भी अपनी भूख मिटा सकता है, लेकिन उसका सारा ध्यान बड़ी मछली पर रहता है और व सफल भी हो जाता है। एक विद्यार्थी को कई बार बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए छोटे- छोटे असम्बद्ध लक्ष्यों को छोड़ना होता है, जिससे सफलता मिलना सरल हो जाती है। Small Goles सकारात्क भी हो सकते है और नकारात्मक भी। यहां नकारात्मकता से तात्पर्य Financial Crisis, Social Crisis] Personal Issues आदि से है।

(3) श्वान निद्रा :

Stay Alert Like A Gog

कुत्ते की तरह सतर्क रहे। अर्थात्त अपने आस-पास के लोगों, वातावरण, छोटी- छोटी चीजों, भावनाओं के प्रति सतर्क रहकर चिन्तन करें, कार्य करे एवं संवेदनशील रहे।

(4) अल्पाहारी : Always Give Right Inputs To Your Sanes

यहां अल्पाहरी से तात्पर्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों के आहार से माना गया है। हमें हमारी पांचों ज्ञानेन्द्रियों से विभिन्न रूपों में आहार प्राप्त होता है, जो हमारे मस्तिष्क के लिए Input होता है। हमेशा अपनी इन्द्रियों को सही दिशा में रखकर सांसरिक ज्ञानरूपी Input होता है। हमेशा अपनी इन्द्रियों को सही दिशा में रखकर सांसरिक ज्ञानरूपी Input होता है। हमेशा अपनी इन्द्रियों को सही दिशा में रखकर सांसरिक ज्ञानरूपी Input प्राप्त करते रहना चाहिए। दन Inputs से हमारे संस्कार एवं व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

(5) गृहत्यागी : Leace Your Comfor Zone

यहां गृहत्यागी से अभिप्राय घर छोड़ने से नहीं है, बल्कि हमें अपने आराम क्षेत्र (Comfort Zone) को छोड़ना है। Comfort Zone के अन्तर्गत अनेक वस्तुएं तथा सुख- सुविधाओं को लिया जा सकता है। विद्यार्थी को अध्ययन करते समय केवल अपने लक्ष्य पर ही ध्यान केन्द्रित रखना चाहिए, तभी सफलता को प्राप्त किया जा सकता है।

टोनी रोबिन्स ने लिखा है कि 'यदि आप वही करते हैं जो हमेशा करते आए है तो आपको ही मिलेगा, जो हमेशा से मिलता आया है। इसलिए आज से ही अपनी कार्यशैली को बदले और सफलता की ऊंचाइयों को छूने के लिए स्वयं को तैयार रखें।

'कोई भी लक्ष्य बड़ी नहीं,
जीता वहीं जो डरा नहीं"

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

MPS
A GROUP OF
VIKAS BALAJI
शुभ दीपावली
महेन्द्र कोठारी
समाजसेवी एवं भाजपा नेता, राजसमंद, M. 9829040224

श्री श्याम मार्केट
टपरिया खेड़ी चौराहा
सत्कार विहार विस्तार
1. आवासीय कन्वर्टेड प्लॉट
2. डामरीकरण रोड
3. लाईट पोल
4. पिल्लर
5. ट्री- गार्ड
6. रोड लाईट
LOOKING FOR A DREAM HOUSE ?
डामरीकरण रोड़ व लाईट के पोल लाइट सहित
बुकिंग प्रारम्भ
LIMITED PLOT
टपरिया खेड़ी चौराहा पर दुकान लेने का सुनहरा मौका।
कुलदीपसिंह गौड़
9414173466
पहले आओ पहले पाओ
आकाशगंगा ड्रिम डवलपर्स प्रा. लि., सोमनाथ चौराहा, आर के हॉस्पीटल रोड़, राजसमंद

माँ लक्ष्मी का आशीर्वाद आप पर बना रहे,
घर में सुख-समृद्धि और शांति सदा बसे।
सुरेन्द्रसिंह राठौड़
विधायक- कुंभलगढ़

दीपावली की सभी जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
CARE LIFE
राजसमंद का सबसे बड़ा व अत्याधुनिक सुविधायुक्त फिजियोथेरेपी क्लिनिक
केयर लाईफ फिजियोथेरेपी क्लिनिक, नाथद्वारा
राजसमंद का प्रथम व एकमात्र लेजर थेरेपी फिजियोथेरेपी क्लिनिक
वर्ष 2014 में फिजियोथेरेपी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर जिला कलेक्टर द्वारा सम्मान
डॉ. राजेश जे बागोरा
[MPT, Ortho & SPORTS MPT, MIAP, SCMT (SPINE), MTFI, CMS & ED
परामर्श
कन्धे का दर्द
गर्दन दर्द
कमर दर्द
साइटीका
स्लीप डिस्क
जोड़ों का दर्द
लकवा
सुन्नपन व झनझनाहट
श्वास की तकलीफ
लिगामेंट इन्जुरी
मांसपेशियों का खिंचाव
डाईट प्लान
योगा
वजन घटाना इत्यादि
कृपया पहले समय लेकर पधारें।
मो. 98295-61644, 8829966222
1, विनायक विहार, पुलिस थाने के पीछे, नाथद्वारा www.carelifephysio.com

माँ लक्ष्मी का आशीर्वाद आप पर बना रहे, घर में सुख-समृद्धि और शांति सदा बसे।
गणेशदास वैष्णव
पूर्व जिला परिषद सदस्य
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-वैरागी वैष्णव समाज
अध्यक्ष- आम मेवाड़ वैरागी वैष्णव समाज
लोकेश दास वैष्णव
फर्म : भाग्योदय ग्रेनाईट्स, मड़का-राजसमंद

दीपोत्सव के पावन पर्व पर माता लक्ष्मीजी
आमजन के जीवन में खुशियों की बारिश करें।

लक्ष्मणसिंह राठौड़

Reporter - ETV Bharat
Chief Editor - Jaivardhan News Rajsamand

शा. मगनलाल छोगालाल सिसोदिया

शुभम ज्वेलर्स

Since 1946

नाथद्वारा का प्रतिष्ठित एवं भरोसेमन्द ज्वैलरी शोरूम

शुभ दीपावली

पाँच पीढ़ियों (78 वर्षों) से आपकी सेवा में तत्पर

सोने व चांदी के कलात्मक आभूषणों के निर्माता एवं विक्रेता।

विजेश 9829241556

सर्राफा बाजार, नाथद्वारा, जिला- राजसमंद

राजेश 9829633556

दीपोत्सव की बधाई व शुभकामनाएं

- श्री आशापुरा माइंस एंड मिनरल एक्सपोर्ट क्वालिटी ब्लॉक
- मां मार्बल एंड माइनिंग एलएलपी
- श्री आशापुरा कॉम्पलेक्स

गांवगुड़ा, खमनोर, जिला- राजसमंद

बिक्री हेतु
कन्वर्टेड प्लॉट

गांवगुड़ा मेंअपने सपनों का घर या सपनों की दुकान बनाएं आज ही!
सुनहरा मौका – अपनी जमीन, अपने सपनों के नाम।

सोहनसिंह राजपूत

महेन्द्र जी सकलेसा

विलास जी कुटे

98203-43232, 99203-63232

जयवर्द्धन

जयवर्द्धन NEWS

C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल,
सौ फीट रोड, राजसमंद मो. 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन